रजिस्ट्री सं० डी०—(डी)—73

REGISTERED NO. D-(D)—73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 3] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 19, 1980 (पौष 29, 1901)

No. 3] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 19, 1980 (PAUSA 29, 1901)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

विषय-सूची

पृष्ठ

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . . 69

भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . 67

भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पो से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .

भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई, अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . 46

भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . . . .

भाग II—खण्ड 2—विधेयक और विधेयक संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें . .

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i) —(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिसमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . . 57

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . . 81

भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश . 17

भाग III—खण्ड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग रेल प्रशासन, उच्च मंत्रालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं 585

भाग III—खण्ड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस 23

भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं 7

भाग III—खण्ड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . . 715

भाग IV—गैर सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस 9

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notification relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	69
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	67
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	47
PART II—SECTION 1.—Act, Ordinances and Regulations.	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committee on Bills	—
PART II.—SECTION 3.—SUB. SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	57
PART II—SECTION 3.—SUB.SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	81
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	17
PART III—SECTION 1.—Notification issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	585
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	23
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	7
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	715
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	9

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1979

सं० 6-प्रेज/80—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य परायणता अथवा अदम्य साहस के कार्यों के लिए "सेना मैडल/आर्मी मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं —

1. मेजर दया राम (आई० सी० 11128)
आर्मी आर्डनस कोर

मेजर दयाराम एक गोला-बारूद कम्पनी के कमान अफसर थे। नार्थ सैक्टर में एक स्थान पर आग लग जाने के कारण आर्मड रेजीमेंटों की प्रथम पंक्ति के पूरे गोला-बारूद पर आग लग जाने और फिर विस्फोट होने की संभावना पैदा हो गई थी। मेजर दयाराम को इस क्षेत्र से गोला-बारूद हटाने की जिम्मेवारी सौंपी गई। अपने कुछ सैनिकों को लेकर इन्होंने बड़ी तत्परता से यह काम शुरू कर दिया और बहुत कम समय में ही 136 टन गोला-बारूद साफ बचा लाए। बड़े खतरनाक गोलों फ्यूजों तथा अन्य विस्फोटक सामान को इन्होंने अपने हाथ से उठाना शुरु कर दिया जिससे प्रेरित होकर इनके दल के अन्य सदस्य भी गोला-बारूद हटाने के काम में लग गए। तीन मौके ऐसे हुए कि जब ये बहुत खतरनाक फ्यूजों को तोड़ रहे थे तो विस्फोट होने से आग लग गई थी। इनका जीवन पूरी तरह खतरे में था लेकिन फिर भी ये विचलित नहीं हुए और बहुत अधिक मानसिक और शारीरिक थकान के बावजूद घंटों तक इस काम में जुटे रहे। 7/8 जून, 1977 की रात ये जम्मू तवी और पठानकोट जाने वाली रेल लाइनों से गोला-बारूद हटाने में लगे रहे और सारी रात काम करने के परिणामस्वरूप ही इन रेल लाइनों से विस्फोटक सामान हटाया जा सका और रेल मार्ग खोला जा सका।

इस प्रकार मेजर दयाराम ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय, नेतृत्व, और असाधारण कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

2. मेजर अजेन्द्र प्रकाश (आई० सी० 11055)
आसूचना कोर

मेजर अजेन्द्र प्रकाश मई, 1975 से नागालैंड में एक इंफैंट्री कम्पनी की कमान कर रहे हैं। अपनी व्यवहार कुशलता, पहल-शक्ति और काम के प्रति निष्ठा से इन्होंने नागालैंड में भूमिगत हुए महत्वपुर्ण नागा नेताओं के साथ बड़े उपयोगी सम्बन्ध स्थापित किए और केन्द्र तथा राज्य की एजेंसियों, सिविल प्रशासन के अधिकारियों और साथ ही स्थानीय नेताओं से भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बना लिए। इनके कठिन परिश्रम और सतत प्रयासों से अनेक महत्वपूर्ण नागा नेताओं से आत्मसमर्पण कराने में सहायता मिली जो भूमिगत हो गए थे। भूमिगत हुए तीन व्यक्तियों ने खुद इन्हें आत्मसमर्पण किया था "शिलांग संधि" के बारे में भूमिगत हुए नागा नेताओं के साथ बातचीत करने में सरकारी एजेंसियों को इनकी काफी सहायता मिली।

नागा विद्रोही नेताओं के साथ बड़ी व्यवहार कुशलता से पेश आने और गांवों का जो भी व्यक्ति इनके सम्पर्क में आया उसकी बात बड़ी शांति से सुनने और उसकी सहायता करने के अपने स्वभाव से इन्होंने नागालैंड में सुरक्षा सेना के प्रति जनता की सद्भावना उत्पन्न करने में भी सहायता की। कई ऐसे मौके आए जब इन्हें दुर्गम पहाड़ी मार्गों और खराब मौसम में अकेले ही जाना पड़ा ताकि सीमा पर और दूर-दराज के इलाकों में अपने काम की खुद निगरानी कर सकें और अपने अधीन काम करने वालों तथा अन्य लोगों को उस काम के लिए प्रेरित कर सकें।

इस प्रकार मेजर अजेंद्र प्रकाश ने असाधारण साहस, पहल-शक्ति, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

3. मेजर राजेन्द्र पाल जैरथ (आई० सी० 18791)
इंजीनियर्स

दूसरे विश्व-युद्ध में पोर्ट ब्लेयर में जमा किए गए जापानी बमों को वहां से सफाई से नष्ट करना था। यह काम फरवरी, 1978 में एक बम डिस्पोजल प्लाटून को सौंपा गया जिसकी कमान मेजर राजेन्द्र पाल जैरथ कर रहे थे। इन्होंने अप्रैल, 1978 में यह काम शुरू किया। उस इलाके को बारीकी से तलाशा। बमों तथा उनकी बारीकियों का बड़ी सावधानी से अध्ययन किया। यह काम इस तरीके से किया जाना था कि कोई भयानक बम विस्फोट न हो और उस इलाके में रहने वालों की जानमाल का कोई नुकसान न हो।

मेजर जैरथ ने शुरू से आखिर तक इस काम की देख-रेख खुद की। इन्होंने तय किया कि विस्फोट नियंत्रित किए जाएं ताकि लोगों की जान माल का कोई नुकसान न होने

पाये । सुरक्षा के सभी उपाय कर लेने के बाद एक प्रतिबंधित क्षेत्र में इन्होंने विस्फोट करके उन बमों को नष्ट किया। इसके लिए इन्होंने बड़ी सावधानी से योजना बनाई और पूरी सूझबूझ से काम लिया । परिणामतः बमों के टुकड़े अधिक नहीं फैल पाए और जान-माल की कोई हानि नहीं हुई ।

इस कार्रवाई में मेजर राजेन्द्र पाल जैरथ ने अनुकरणीय साहस, प्रशंसनीय सूझबूझ, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

4. मेजर कंवर रामबीर सिंह तोमर (आई० सी० 21693)
सिख

मेजर कंवर रामबीर सिंह तोमर दक्षिण बनलाइफाई क्षेत्र में असम राइफल्स की एक बटालियन में विंग कमांडर के पद पर कार्य कर रहे थे । 16 जून, 1977 को सूचना मिली कि हथियारों से लैस एक गिरोह ने अन्तरराष्ट्रीय सीमा पार कर ली है। मेजर तोमर तुरन्त अपने सैनिकों को लेकर गए और गिरोह को रास्ते में रोक लिया । बड़ी तत्परता और दृढ़ता से की गई इस कार्रवाई में छः विद्रोहियों को पकड़ लिया गया और काफी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद हुआ ।

इस कार्रवाई में मेजर कुंवर रामबीर सिंह तोमर ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

5. मेजर रवीन्द्र शर्मा (एम० आर० 2356)
सेना चिकित्सा कोर

23 अप्रैल, 1977 को दो अफसर जोंगा (जीप) में परतापुर से लेह जा रहे थे । रास्ते में खंडूगल दर्रे के पास भारी हिमपात के कारण इनकी जीप बर्फ में फंस गई । इसकी सूचना मिलने पर क्षेत्रीय मुख्यालय से उसी दिन तीन अफसर और पांच जवान इनके बचाव के लिए भेज दिए गए ।

स्काउट बटालियन के वरिष्ठ चिकित्सा अफसर मेजर रवीन्द्र शर्मा बचाव दल का नेतृत्व कर रहे थे । यह बचाव दल उस इलाके तक तो गाड़ी में गया और उसके बाद बर्फ में फंसे अफसरों तक पैदल ही आगे बढ़े । इस समय तापमान शून्य से काफी कम था और बर्फानी तूफान के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । कड़ाके की सर्दी एवं अधिक ऊंचाई के कारण एक अफसर और चार जवान हिम्मत हार गए इसलिए उन्हें वापस भेजना पड़ा । लेकिन मेजर शर्मा ने हिम्मत नहीं हारी और अपने शेष साथियों के साथ वे कमर-कमर तक बर्फ में आगे बढ़ते रहे । सभी मुश्किलों का सामना करते हुए ये लोग अगले दिन सुबह धंसी हुई जीप तक पहुंच गए । इस दल ने धंसी हुई जीप से अफसरों को निकाल लिया । इन दोनों अफसरों और जोंगा के ड्राइवर को पर्वत रोग हो गया था और थकान के कारण ये बहुत सुस्त हो गए थे । बचाव दल विशेषकर उनके नेता का साहस देखकर इन असतरों में भी कुछ स्फूर्ति आई और उन्हें धीरे-धीरे नार्थ पूलू तक ले आया गया ।

इस कार्रवाई में मेजर रवीन्द्र शर्मा ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

6. मेजर मंजीत सिंह (आई० सी० 25966)
मराठा लाईट इंफेंट्री

17 फरवरी, 1978 को माणा में भारी हिमस्खलन हुआ। जाड़ों में संक्रियात्मक कार्य हेतु उस समय वहां एक स्काउट दल तैनात था । हिमस्खलन से बहुत सी इमारतों की नींवें ढह जाने और उनके क्षतिग्रस्त हो जाने से बहुत नुकसान हुआ । हिमस्खलन के दौरान गिरने वाले बड़े-बड़े हिमखंडों और मलबे के बोझ से अचानक एक इमारत ढह गई । इस दुर्घटना के समय इमारत में 7 व्यक्ति थे ।

उपर्युक्त स्काउट कंपनी के कमान अफसर मेजर मंजीत सिंह को एक जोरदार धमाका सुनाई दिया । इस धमाके ने उनके बैरक को हिला दिया । क्षण भर को वे स्तब्ध रह गए । हिमस्खलन से गोला-बारूद और उनकी बैरकों को भी क्षति पहुंची है, यह सुनते ही, कुछ जवानों को इकट्ठा कर, वे दुर्घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े । उनके समक्ष एक ही लक्ष्य था—अपने दल के उन सदस्यों को बचाना जो हिमस्खलन के कारण वहां फंस गए थे। हिमस्खलन जारी था, फिर भी मेजर मंजीत सिंह उस बैरक तक, जहां 7 व्यक्ति दबे पड़े थे, पहुंच ही गए और राहत कार्य में जुट गए । टखने में कुछ चोट आने के बावजूद वे एक घंटे तक इस प्रयास में जुटे रहे और 5 व्यक्तियों को निकालने में सफल हो सके । दो अन्य व्यक्ति स्वयं बाहर निकल आए । मेजर मंजीत सिंह ने जिन पांच व्यक्तियों को निकाला था उनमें एक को ही बचाया जा सका ।

इस कार्रवाई में मेजर मंजीत सिंह ने असाधारण साहस, तत्परता एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

7. मेजर श्याम सुन्दर नरूला (आई० सी० 25088)
पंजाब

अक्तूबर, 1977 के दौरान हरसील और शुगर सैक्टर के बीच गश्त लगाने वाली एक विशेष टुकड़ी का नेतृत्व मेजर श्याम सुन्दर नरूला कर रहे थे । हरसील से शुगर सैक्टर की गश्त लगाते हुए यह टुकड़ी बहुत ऊंचे, खतरनाक और दुर्गम पर्वतों से होकर गुजरी और अक्तूबर में उसी मार्ग से वापस लौटी ।

6 अक्टूबर, 1977 को लमखग दर्रे को पार करते समय सीधी खड़ी चट्टानों पर चढ़ने के लिए इस गश्ती टुकड़ी को अनेक छोटी-छोटी रस्सियों में गांठ बांध कर रस्सी के सहारे दर्रे की चोटी पर पहुंचना पड़ा । नायक मोहन सिंह अंतिम व्यक्ति थे जो रस्सी की सहायता से दर्रे को पार कर रहे थे । अचानक रस्सी की गांठ टूट गई और मोहन सिंह लुढ़कते हुए एक गहरी हिम-दरार में जा गिरे । दल के सभी

सदस्य तो दर्रा पार कर चुके थे इसलिए मोहन सिंह को बचाने वाला उस तरफ कोई न था। दल के नेता मेजर नरूला ने अपने इस साथी को बचाने के लिए दो जवानों को साथ लिया और बर्फ खोदने की कुदाली से बर्फ खोदते हुए और उसमें पैर जमाते हुए नीचे उतरे ।

हिमपात हो रहा था, बर्फानी तूफान जारी था, इस पर भी मेजर नरूला ने दो घंटे के कठिन प्रयास से नायक मोहन सिंह को बचा लिया । वहां नायक मोहन सिंह की प्राथमिक चिकित्सा की गई और फिर उन्हें सुरक्षित दर्रे से पार ले आया गया ।

इस कार्रवाई में मेजर श्याम सुन्दर नरूला ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

8. कैप्टन अंजन कुमार भट्टाचार्जी (आई० सी० 32015)
लद्दाख स्काउट

अक्टूबर, 1975 से जून, 1977 के दौरान कैप्टन अंजन कुमार भट्टाचार्जी ने एक स्काउट बटालियन में काम किया । उनकी तैनाती बहुत ऊंचाई पर स्थित एक चौकी पर हुई । कड़ाके की सर्दी की परवाह किए बिना उन्होंने सौंपे गए प्रत्येक कार्य को पूरा किया । इन्होंने कराकोरम दर्रे की लगातार चार बार गश्त लगाई । एक गश्त लगभग 180 किलोमीटर की थी । एक बार चौकी पर एक अफसर बीमार पड़ गया और उसे इलाज के लिए 7 दिन तक बाहर नहीं भेजा जा सका । कैप्टन भट्टाचार्जी ने बहुत लगन से उनकी सेवा की। उन्हीं के कारण रुग्ण अफसर और चौकी के अन्य लोगों का हौंसला बना रहा ।

इनके स्टाउट बटालियन में काम करने के दौरान ही, एक बार बटालियन कराकोरम पर्वतमाला की सती कांगड़ी चोटी पर चढ़ी । कैप्टन अंजन कुमार इस पर्वतारोहण अभियान दल के उपनेता थे । अभियान की सफलता के पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति यही थे । अभियान के समय दल का एक सदस्य चट्टान से नीचे गिरने के कारण बुरी तरह घायल और बेहोश हो गया । लेकिन कैप्टन अंजन कुमार ने अपनी जान जोखिम में डाल कर उसकी प्राण-रक्षा की।

इस प्रकार कैप्टन अंजन कुमार भट्टाचार्जी ने असाधारण साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

9. कैप्टन सैयद यासीन (आई० सी० 28990)
इंजीनियर्स

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में जब बाढ़ आई थी तब इंजीनियर रेजिमेंट के कैप्टन सैयद यासीन को राहत और बचाव कार्य सौंपा गया था। उन्हें सीलाल नदी की बाढ़ की चपेट से घिरे घाटल शहर जाने का आदेश दिया गया । उस शहर को जाने वाली सड़क पर पानी बह रहा था और बहाव भी बहुत तेज था । कैप्टन यासीन ने नाव में आवश्यक सामान भरा और तेज धारा को चीरते हुए शहर की ओर चल दिए । राह में उन्हें पेड़ों पर चढ़े हुए स्त्री-पुरुषों की चिल्लाहटें सुनाई पड़ी । शाम गहरी हो रही थी, कैप्टन और उनका दल थक चुका था । फिर भी नाव का रुख पेड़ों के तनों को पकड़ कर लटके हुए लोगों की ओर मोड़ दिया गया । नाव को एक रस्से की सहायता से पास के पेड़ से बांध दिया गया ताकि नाव गहरे पानी में खड़ी रह सके । फिर जवान, तेज बहते हुए, कंधे तक ऊंचे पानी में चलकर स्त्री-पुरुषों को नाव तक लाए और नजदीक के बैलतला गांव ले गए ।

बैलतला पहुंचते ही कैप्टन यासीन के सामने एक और दिक्कत पेश आई। हुआ यह कि जिस सड़क से वे बैलतला आए थे, वह सड़क पानी में डूब गई थी । इससे उनका और उनके साथियों का संपर्क दूसरी ओर से टूट गया कैप्टन ने समीप के बांध तक और वहां से मुख्य बेस तक जाने का साहसिक निर्णय किया । कंधों तक पानी में, संकरे बांध के साथ-साथ, अंधकार में चलते हुए उनका दल सुरक्षित रूप से बेस तक पहुंच गया । वहां पहुंच कर उन्होंने घाटल क्षेत्र में आई बाढ़ का समाचार भेजा और फिर बिना समय नष्ट किए अपने साथियों के लिए रसद आदि लेकर लौट पड़े । इस अवधि के दौरान उन्होंने न आराम किया, न ही वे सोए । बस राहत कार्य में जुटे रहे । उनके दृढ़ प्रयास से सैकड़ों लोगों की जानें बचायी जा सकीं । उन्होंने बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में हवाई जहाज से गिराई गई 27 नावों में भरी सहायता सामग्री भी वितरित की ।

इस प्रकार कैप्टन सैयद यासीन ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

10. कैप्टन जूदे लारेंस क्रूज (एस० एस० 26451)
पैराशूट रेजिमेंट

जुलाई, 1978 में लद्दाख में मुन और कुन पर्वतारोहण अभियान दल में कैप्टन जूदे लारेंस क्रूज को उपनेता चुना गया । अभियान की प्रारम्भिक तैयारी के दौरान ही, टीम का चुनाव, प्रशिक्षण, प्रशासनिक तैयारी, बेस कैम्प की स्थापना आदि में उनका योगदान प्रशंसनीय था । अभियान के दौरान दल के सदस्यों के मध्य जो उत्साह और जोश बनाए रखना जरूरी होता है, उस वातावरण को बनाए रखने में कैप्टन जूदे बहुत कुशल हैं । वे दल को अंतिम कैम्प तक ले गए। जहां अभियान के नेता की अकस्मात् मृत्यु हो गई ।

उसके बाद कैप्टन जूदे ने दल का नेतृत्व संभाला । दल के नेता की अकस्मात् मृत्यु हो जाने के कारण सदस्यों का मनोबल गिर गया था । कैप्टन क्रूज को उनका मनोबल ऊंचा उठाना था जो बड़ा कठिन और नाजुक कार्य था । दूसरे, मृत नेता की देह को 3,400 फुट नीचे प्रशासनिक कैंप में ले जाना था । यह भी बहुत कठिन काम था लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से यह काम अपने हाथ में लिया और अकेले ही मृत शरीर को ढो कर नीचे लाए और फिर वापस कैंप लौट आए । उनका यह कार्य देख, दल के सदस्यों में नयी प्राण-शक्ति संचारित हो गई और मार्ग बहुत दुर्गम होने तथा मौसम

खराब होने के बावजूद कैप्टन क्रूज एक ही दिन में दल को कुन शिखर तक पहुंचाने में सफल हो गए—एक अनूठा, अभूतपूर्व कार्य पूरा करने में सफल हो गए।

इस प्रकार कैप्टन जूदे लारेंस क्रुज ने अनुकरणीय, साहस, दृढ़ निश्चय, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

11. सैकिन्ड लैफ्टिनेंट सुनील चौपड़ा (आई० सी० 43538) । मद्रास

22 अप्रैल, 1978 को एक जवान अग्रिम चौकी पर डाक देने के बाद लौटते समय हिमस्खलन के साथ फिसल गया था। इसकी सूचना मिलने पर सैकिन्ड लैफ्टिनेंट सुनील चौपड़ा 15 जवानों के एक दल के साथ दुर्घटनास्थल की ओर चल पड़े । दुर्घटनास्थल पर पहुंचने पर जब वह लापता जवान नहीं दिखाई दिया तो सैकिन्ड लैफ्टिनेंट चौपड़ा तथा एक और जवान रस्सियों की सहायता से खड़ी चट्टान से नीचे उतरे। एक बार तो वह स्वयं भी गिर पड़े थे और ढाल के साथ-साथ नीचे लुढ़कने लगे थे लेकिन तभी साथी जवानों ने रस्सियों की सहायता से इनको वापस खींच लिया । इससे वे भयभीत नहीं हुए और साहस के साथ फिर आगे बढ़े लेकिन उक्त जवान के शरीर का कहीं नामो-निशान नहीं दिखाई दिया और बढ़ते हुए अंधेरे के कारण उस दिन खोज का काम रोक देना पड़ा ।

अगले दिन बड़े सवेरे ये उस जवान की खोज में अपने जवानों को लेकर पुनः चल पड़े । रस्सियों की सहायता से इनका दल कच्ची चट्टानों के ढलानों से नीचे उतरा और करीब 6 घंटे की खोज के बाद उस जवान के शव को ढूंढ पाए । चूंकि इन ढलानों से शव को ऊपर ले जाना संभव नहीं था अतः यह तय किया गया कि उक्त जवान के शव को सतलुज नदी पार करके लाया जाए । सतलुज नदी में उस समय बाढ़ आई हुई थी । इन्होंने किसी प्रकार से रस्सी को नदी के उस पार पहुंचाया और उसके बाद उस रस्सी की मदद से इनका सारा दल, उक्त जवान के शव सहित, नदी पार कर सका ।

इस प्रकार सैकिंड लैफ्टिनेंट सुनील चौपड़ा ने असाधारण साहस, दृढ़ निश्चय, नेतृत्व और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

12. (जे० सी०-34194) सूबेदार मेजर मथुरा प्रसाद इंजीनियर्स

सूबेदार मेजर मथुरा प्रसाद व्यास सतलुज लिंग परियोजना में जुलाई, 1976 में प्रतिनियुक्ति पर गए थे । वहां इन्हें एक दुर्गम मार्ग के साथ-साथ देहर पावर प्लांट के लोहे के पैनस्टाकों को लगाने और उन्हें जोड़ने का काम सौंपा गया था । ऐसे दुर्गम भूभागों में काम की प्रगति बराबर बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है कि वहां काम करने वाले लोगों में विशेष कौशल और विशेष उत्साह हो । इस काम में सूबेदार मेजर मथुरा प्रसाद शुरू से अन्त तक उल्लेखनीय प्रगति करते और वास्तव में इसे पूरा करने का श्रेय उन्हीं को जाता है । इसकी वजह से ही व्यास और सतलुज नदियों के बीच लंबी जल संवाहक प्रणाली को जोड़ने तथा चालू करना संभव हो सका।

इस प्रकार सूबेदार मेजर मथुरा प्रसाद ने असाधारण साहस, दृढ़ निश्चय, व्यावसायिक कौशल तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

13. (जे० सी०-66197) सूबेदार विशंभर सिंह जाट राइफल्स

सूबेदार विशंभर सिंह उत्तरी क्षेत्र में नियंत्रण रेखा के समीप एक एकाकी चौकी की कमान संभाले हुए थे । पाकिस्तानी अग्रिम प्रतिरक्षा पंक्ति इस चौकी पर पूरी तरह से हावी थी ।

इन सब कठिनाइयों के बावजूद सूबेदार विशंभर सिंह नियमित रूप से इस क्षेत्र में गश्त लगाते रहे और अपने दल के अन्य जवानों का नेतृत्व करते रहे जिससे हमारे देश की सीमा में घुसपैठियों की घेसपैठ रुक गई । इन्होंने उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों का सद्भाव तथा विश्वास प्राप्त किया, जो निःसंदेह लाभकारी सिद्ध हुआ । इन्होंने जिस कुशलता व निर्भीकता से काम किया उससे नियंत्रण रेखा के उल्लंघन की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी हुई ।

इस प्रकार सूबेदार विशंभर सिंह ने अदम्य साहस, पहल शक्ति, दृढ़ निश्चय तथा उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

14. (जे० सी०-48993) सूबेदार रमाशंकर तिवारी महार

3 अगस्त, 1978 को सतलुज नदी का पानी अपने किनारों को तोड़कर लुधियाना जिले की ओर बहने लगा जिसकी वजह से वहां बहुत बड़े क्षेत्र में बाढ़ से तबाही मच गई । महार रेजिमेंट की एक यूनिट बाढ़ के पानी से घिरे गांवों के असहाय लोगों को तत्काल निकालने के लिए बुलाई गई । यूनिट की नाव का संचालन यूनिट के कमान अफसर कर रहे थे और सूबेदार रमाशंकर तिवारी भी उनके साथ नाव में थे ।

नाव के संचालन पानी के साथ-साथ बहुत मलबा बहने के कारण कठिन हो गया था। आउट-बोर्ड मोटर के प्रणोदक (प्रापलर) मलबे से टकराने के कारण क्षतिग्रस्त हो गए थे और पानी की तेज धारा के साथ नाव भी बहने लगी थी। जिन लोगों को बाढ़ की चपेट से बचाकर लाया गया था वे भी नाव में सवार थे । इस विकट स्थिति में सूबेदार रमाशंकर तिवारी अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह न करते हुए, पानी में कूद पड़े और एक रस्सी की सहायता से नाव को खींच कर सुरक्षित स्थान पर लाने में सफल हो गए।

इस प्रकार सूबेदार रमाशंकर तिवारी ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय, पहल शक्ति और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

15. (जे० सी०-66476) नायब सूबेदार किशन पाल सिंह
सेना आर्डनेंस कोर

जून, 1977 में उत्तरी क्षेत्र में गोला-बारूद के एक स्थान पर आग लग गई थी और उसमें विस्फोट हो रहे थे। इस क्षेत्र से गोला-बारूद हटाने के लिए एक अफसर के साथ नायब सूबेदार किशन पाल सिंह को भी लगाया गया था।

इन्होंने खतरनाक गोला-बारूद को अपने हाथों से उठाया और पास के ऐसे स्थान पर ले गए जहां इसको नष्ट किया जा सके। अपने जीवन को भारी खतरे में डालकर इन्होंने बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम और मानसिक तनाव के अधीन कई घंटों तक लगातार कार्य किया और इस तरह न केवल उक्त स्थान से रिकार्ड समय में गोला-बारूद हटाने में सहायता की बल्कि कई लाख रुपए मूल्य का गोला-बारूद बचाया भी जा सका।

इस प्रकार नायब सूबेदार किशन पाल सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. (जे० सी०-75907) नायब सूबेदार मनोहर जोशी
कुमाऊं

"सागर से आकाश" अभियान के दौरान सर एडमंड हिलैरी, नर पर्वत की चोटी पर चढ़ते समय बीमार हो गए थे। उन्हें वहां से सुरक्षित निकालने का काम माणा पर तैनात एक स्काउट बटालियन को सौंपा गया था। 14 अक्तूबर, 1977 को नायब सूबेदार मनोहर जोशी को सर एडमंड हिलैरी को बचाने के लिए आवश्यक प्रथम उपचार के सामान के साथ भेजा गया। प्रथम उपचार के सामान में दो आक्सीजन गैस के सिलिंडर, दो स्ट्रेचर, धुंआ छोड़ने वाली मोमबत्तियां और वायरलैस सैट थे। यह काम अत्यंत ही कठिन था। उन्हें माणा से पर्वत की 17,800 फुट की ऊंचाई पर चढ़ना था जहां सर हिलैरी बीमार पड़े थे। 15 अक्तूबर, 1977 को ये माणा से चल पड़े। इन्होंने पहाड़ी पर सीधे चढ़ना आरम्भ किया और मार्ग में खड़ी चट्टानों, कच्चे शिलाखण्डों और हिम नदियों को पार किया। ये उसी दिन सर हिलैरी के पास पहुंच गये और उनका प्रथम उपचार शुरू कर दिया इसके बाद इन्होंने बर्फ को खोदकर हैलीकाप्टर के उतरने के लिए सुरक्षित हैलीपैड बनाया। इन्होंने धुएं के संकेत से वायु सेना के हैलीकाप्टर को सुरक्षित हैलीपैड पर उतरने के लिए उसका मार्ग निर्देशन किया और इस प्रकार सर हिलैरी को वहां से सफलतापूर्वक सुरक्षित निकालने में सहायता की।

इस प्रकार नायब सूबेदार मनोहर जोशी ने असाधारण नेतृत्व, अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. (जे० सी०-78430) नायब सूबदार करनैल सिंह
आर्टीलरी

29/30 मई 1977 की रात रोवटा और अदल गिरी के बीच की जगह पर 13 अप-तेजपुर एक्सप्रेस रेलगाड़ी बेकी नदी में गिर गई थी। बचाव कार्य के लिए सेना की एक टुकड़ी भेजी गई जिसमें नायब सूबेदार करनैल सिंह कार्य-भारी जूनियर कमीशन अफसर थे। नदी की बीच धारा में लटकते हुए एक डिब्बे से यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकालने का काम इन्हें सौंपा गया। इन्होंने उस डिब्बे से रस्सी बांधी और अपने जीवन की परवाह किए बिना उस रस्सी के सहारे खुद उस डिब्बे में गए। लोग जान बचाने के लिए चिल्ला रहे थे। इन्होंने एक-एक कर 20 यात्रियों को रस्सी के सहारे बाहर निकाला। इन यात्रियों में अधिकांश महिलाएं और बच्चे थे।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार करनल सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. (जे० सी०-85996) नायब सूबेदार फिलिप मणिक राज
इंजीनियर्स

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में, अक्तूबर, 1978 में आई बाढ़ में राहत और बचाव कार्य के लिए सेना की एक टुकड़ी भेजी गई जिसके कार्यभारी अफसर नायब सूबेदार फिलिप मणिक राज थे। अपने साथियों के साथ इन्होंने पूरे महीने भर लगातार बचाव और राहत कार्य किया और विपरीत परिस्थियां होने पर भी 4200 लोगों को बचाया और 3000 लोगों तक राशन पहुंचाया। 10 अक्तूबर, 1978 को जब ये ढोलागढ़ में बचाव कार्य में लग हुए थे तो इन्होंने देखा कि एक औरत अपनी दो लड़कियों के साथ घुटने तक पानी में चल रही है। ये लोग आगे बढ़ ही रहे थे कि इनमें से एक लड़की अचानक नहर में बहने लगी। नहर साथ-साथ बह रही थी जिसका इनको पता नहीं था। आस पास कोई नाव भी नहीं थी। स्थिति को समझते ही नायब सूबेदार मणिक राज पानी में कूद पड़े और नहर की तेज धारा में बहती हुई लड़की को बाहर निकाल लाए। लड़की का प्रथम उपचार करने के बाद उसे अस्पताल भिजवाया।

इस प्रकार नायब सूबेदार फिलिप मणिक राज ने अनुकरणीय साहस पहलशक्ति, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

19. (1170959) बैरक हवलदार मेजर वडके विला नारायण सदानन्दन
आर्टिलरी

झझर को बाढ़ से बचाने के लिए नाला नं० 8 के साथ बना बांध 9 अगस्त, 1977 को गांव के लोगों ने काट दिया था जिसका उद्देश्य गांवों की तरफ पानी का बहाव कम करना था। बांध कटने से पानी तेजी से झझर की ओर बढ़ने लगा और उसे शहर को गम्भीर खतरा पैदा हो गया। पास के इलाके में सेना की आर्टिलरी रेजीमेंट थी जिसे बांध का कटाव रोकने के लिए तुरन्त भेज दिया गया। बैरक हवलदार मेजर वडकेविला नारायण सदानन्दन ने अपने

कुछ जवानों के साथ बांध के एक ओर की दरार भरने का काम सम्भाला। बड़ी तेजी के बह रहे पानी के साथ संघर्ष करते हुए इन्होंने लकड़ी का एक बाड़ा खड़ा किया और उसके साथ-साथ रेत के बोरे डाल दिए जिससे बांध का कटाव रुक गया इसके बाद पानी की तेज धार में बहने से बचने के लिए अपने को रस्सों से बांध कर इन्होंने नाले की तह में लकड़ी के लम्बे लम्बे गाड़ने शुरू कर दिए और उस तेज बहाव में तब तक कम काम करते रहे जब तक बाड़ा बन-कर तैयार नहीं हुआ। इसके साथ ही इन्होंने अपने साथियों से खास-खास जगहों पर बाड़े के साथ साथ रेत के बोरे डलवा दिये। बांध का कटाव पूरी तरह भरने तक लगातार काम में जुटे रह कर इन्होंने साथियों को भी पूरे जोरों से काम करने के लिए प्रेरित किया और झझर को बाढ़ के प्रकोप से बचा लिया।

इस कार्रवाई में बैरक हवलदार मेजर वडकेविला नारायण सदानन्दन ने अनुकरणीय साहस, दृढ़निश्चय, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

20. (2851760) हवलदार गंगा सिंह
राजपूताना राइफल्स

6 अगस्त, 1977 की रात एक एजेंट नियंत्रण रेखा पार करके हमारे इलाके में घुस आने वाला था। इसके पकड़ने के लिए एक गश्ती दल भेजा गया जिसके दूसरे कमान अफसर हवलदार गंगासिंह थे। पूंछ सक्टर की एक चौकी से यह दल उसी रात टोह में निकल पड़ा और और छिप कर उबड़-खाबड़ मार्ग से होते हुए इसने नाले के पार, जिसमें बाढ़ आई हुई थी, घात लगाई। कुछ देर बाद इन्होंने देखा कि एक व्यक्ति नियंत्रण रेखा पार करके आ रहा है। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न कर हवलदार गंगा-सिंह तत्काल आगे बढ़े और उस घुसपैठिये को दबोच लिया। घुसपैठिये ने बच निकलने के प्रयास में इन्हें एक लाठी मारी जिससे इनकी अंगुली की हड्डी टूट गई और वह नाले में कूद गया। चोट लगने के बावजूद हवलदार गंगासिंह ने उसका पीछा किया और उस पर काबू पा लिया।

इस कार्रवाई में हवलदार गंगासिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. (1177892) लांस हवलदार राम सिंह
आर्टीलरी

29/30 मई, 1977 की रात 13 अप-तेजपुर एक्सप्रेस रेलगाड़ी ऊदलगिरी रेलवे स्टेशन के पास बेकी नदी में गिर गई थी। नदी में डूबे हुए यात्रियों तथा उनके सामान की खोज और बचाव कार्य के लिए लांस हवलदार राम सिंह के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी भेजी गई। तब लगातार मूसला-धार वर्षा हो रही थी और बेकी नदी में भारी बाढ़ आई हुई थी। इन्होंने अपने जीवन को संकट में डालकर एक घायल यात्री को बाहर निकाला। इसके अलावा इन्होंने तीन लाशें, बहुत बड़ी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद, उपस्कर तथा यात्रियों का सामान भी नदी से बाहर निकाला।

इस कार्रवाई में लांस हवलदार रामसिंह ने अदम्य साहस, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

22. (1521862) नायक अजायब सिंह
इंजीनियर्स

असम के सिब सागर जिले में 2 सितम्बर, 1977 को बहुलिया, खानगांव और डीमी इलाके में अन्य गांव पूरी तरह बाढ़ के पानी में डूब गए थे। डिब्रूगढ़ की इंजीनियर रेजीमेंट की एक टुकड़ी इन गांवों में बाढ़ से घिरे लोगों को बचाने के लिए भेजी गई थी।

यह टुकड़ी जब एक नाव में आगे बढ़ रही थी तो एक गांव की ओर से कुछ चिल्लाहट सुनाई दी। बाढ़ में डूबे एक गांव के ऊंचे टीले में लगभग 35 औरतों और बच्चों ने शरण ली हुई थी। ये लोग बड़े भयभीत से वहां खड़े थे। टीले के पास काफी कीचड़ और झाड़ियां थीं जिससे नाव टीले से 30 फुट की दूरी तक ही जा सकती थी। बाढ़ का पानी तेजी से बह रहा था और नाव को वहां रोकना कठिन था। नायक अजायब सिंह अपने तीन अन्य साथियों के साथ नाव में उतरे और चार फुट गहरे पानी में खड़े हो कर उन्होंने नाव रोकी। लेकिन औरतें और बच्चे इतने गहरे पानी से होकर नाव में आने से डरने लगे। इस पर नायक अजायब सिंह खुद टीले पर गए और उन्हें अपने कन्धे पर बिठाकर नाव में चढ़ाया। इस प्रकार उन्होंने सभी औरतों और बच्चों को बचा लिया।

इस तरह नायक अजायब सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

23. (1440165) नायक मोहिन्दर सिंह
इंजीनियर्स

अगस्त, 1978 में सतलुज नदी के आस-पास के इलाकों में भारी वर्षा होने के कारण इसमें बाढ़ आ गई थी। फिरोजपुर का काफी बड़ा इलाका पानी में डूब गया था और वहां भारी तबाही हो गई थी। बाढ़ से घिरे लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए 5 अगस्त, 1978 को सेना की सहायता मांगी गई।

जोरा सब-डिवीजन में भाखू इलाके में राहत कार्य के लिए भेजी गई इंजीनियर टुकड़ी में नायक मोहिन्दर सिंह भी थे। इन्हें एक नाव का इंचार्ज बनाया गया था और ये आउटबोट मोटर भी चला रहे थे। एक बार बाढ़ से घिरे लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जाते हुए इनकी नाव की मोटर तीन बार खराब हो गई। लेकिन इन्होंने बड़ी होशियारी से काम लिया और लोगों को सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने में सफल हुए। पलानवाला इलाके में राहत कार्य करते हुए एक सेपर की मृत्यु हो गई। इस पर नायक मोहिन्दर सिंह को इस इलाके में सहायता करने के लिए बुलाया गया और इन्होंने सहर्ष इस काम को स्वीकार कर लिया।

इनके अथक परिश्रम और साहस की लोगों ने तथा स्थानीय प्रशासन ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस प्रकार नायक मोहिन्दर सिंह ने अनुकरणीय साहस, पहल शक्ति, व्यावसायिक कुशलता और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

24. (1177739) नायक ललित बहादुर
आर्टीलरी

29/30 मई, 1977 की रात 13 अप-तेजपुर एक्सप्रेस रेलगाड़ी ऊदलगिरी रेलवे स्टेशन के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी। इस दुर्घटना में बचे हुए लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने और अन्य लोगों की खोज करने के लिए सेना की एक टुकड़ी भेजी गई जिसके कार्यभारी अफसर नायक ललित बहादुर थे। भारी वर्षा के कारण बेकी नदी के पानी से सारा इलाका जलमग्न हो गया था और कहीं-कहीं कंधों तक पानी था। वर्षा अभी भी मूसलाधार बरस रही थी। इन परिस्थितियों में नायक ललित बहादुर ने अपने दल को बचाव कार्य में लगाया और आंशिक रूप से पानी में डूबे हुए एक डिब्बे में 5 यात्रियों को, जिन्हें चोटें लगी हुई थीं, बचाकर बाहर निकाल लाए। इसके अलावा जीवित अथवा मृत व्यक्तियों, हथियारों, अन्य सामान आदि ढूंढने के लिए इन्होंने काफी बड़े इलाके की खोज-बीन की और चार यात्रियों के शव तथा अनेक छोटे हथियार, गोला-बारूद तथा उपस्करों को उस इलाके से निकाल कर लाए।

इस कार्रवाई में नायक ललित बहादुर ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

25. (1326803) लांस नायक राम चन्द्रन
इंजीनियर्स

लांस नायक राम चन्द्रन तिरहुत क्षेत्र के रक्षित खण्ड में मार्ग निर्माण दल के सैक्शन सेकिंड-इन-कमान थे। 1 जून, 1978 को जब मार्ग निर्माण कार्य चल रहा था, एक टन का एक ट्रक खाई में लुढ़कने लगा। लांस नायक रामचन्द्रन अपने अन्य दो साथियों के साथ ट्रक में कूद कर उसे रोकने की कोशिश करने लगे। इस दौरान यह महसूस किया गया कि जहां ट्रक को रोक पाना असम्भव है वहां तीनों सैनिकों की जान खतरे में पड़ सकती है। इन्होंने अपने दोनों साथियों को तुरन्त गाड़ी से बाहर धकेल कर उनकी जान बचा ली। उन्हें बाहर निकालने की खातिर ये खुद गाड़ी के अन्दर ही रह गए। इस कार्रवाई के दौरान उनकी दाईं टांग गाड़ी तथा मिट्टी के पुश्ते के बीच फंस कर जख्मी हो गई तथा बाद में उसे काटना पड़ा। अन्य दोनों सैनिकों को कोई चोट नहीं आई। लांस नायक रामचन्द्रन की इस कुर्बानी के फलस्वरूप ही उनके दोनों साथियों की जान बच गई।

इस कार्रवाई में लांस नायक रामचन्द्रन ने अनुकरणीय साहस, पहल शक्ति, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

26. (6311955) लांस नायक धन सिंह
सिगनल्स

लेह तथा सैक्टर मुख्यालय के बीच की संचार व्यवस्था पैदल-पथ के साथ-साथ बनी है। 1977-78 में इतनी कड़ाके की सर्दी पड़ी कि इस क्षेत्र में दस से पन्द्रह फुट बर्फ एकत्र हो गई और संचार व्यवस्था टूट गई। लाइन ठीक करने का काम जिस टुकड़ी को सौंपा गया वह दीगर से 8 किलोमीटर से आगे न जा सकी। लांस नायक धन सिंह को, जो सीबू में इस टुकड़ी के गैर-कमीशन अफसर इंचार्ज थे, इस लाइन की खराबी ठीक करने का आदेश मिला। ये 8 अप्रैल, 1978 को अपने साथियों के साथ दिगारला की ओर चल पड़े। इन्होंने देखा कि 200 मीटर लम्बी लाइन हिम-स्खलन के कारण टूट गई है। लांस नायक धन सिंह और इनके साथियों ने टूटी हुई केबलों को प्रयोग में लाकर दो दिन लगातार काम करने के बाद वह लाइन पूरी तरह से ठीक कर दी। गहरे बर्फ से घिरे उस खतरनाक इलाके में निरन्तर काम करते रहने के फलस्वरूप ही यह प्रशंसनीय उपलब्धि प्राप्त की जा सकी।

इस प्रकार लांस नायक धन सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

27. (405/792) राइफलमैन रघुबीर सिंह बुटोला
(मरणोपरान्त)
गढ़वाल राइफल्स

राइफलमैन रघुबीर सिंह बुटोला अगस्त, 1977 में स्काउट बटालियन के एक विशेष गश्ती दल के सदस्य थे। जम्मू कश्मीर में हरसिल से माणा तक के क्षेत्र की गश्त की जिम्मेवारी इस दल पर थी। इस गश्ती दल को बर्फ से ढकी खड़ी चट्टानों, खतरनाक हिम-नदियों और बर्फ की दीवारों से हो कर गुजरना पड़ता था। राइफलमैन बुटोला अपने गश्ती दल की सहायक पंक्ति के संचालक थे। जब यह दल एक खतरनाक ढलान पार कर रहा था तभी एक जवान बीमार पड़ गया और वह आगे न चल सका। उस बीमार साथी की मदद करने के उद्देश्य से राइफलमैन बुटोला अपने सामान के अलावा उसका सामान भी ढोकर ले गए।

9 अगस्त, 1977 को जब यह गश्ती दल एक सीधी खड़ी चट्टान को पार कर रहा था तो चट्टान से टूट कर लुढ़कता हुआ एक पत्थर इस गश्ती दल के एक सदस्य के सिर पर आ लगा। वह व्यक्ति अपना संतुलन खो बैठा और एक खाई में गिर गया। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर राइफलमैन बुटोला उसी समय कूद पड़े और उन्होंने अपने उस जख्मी साथी को पकड़ लिया। उन्होंने उसे अपने कंधों पर उठाया और वापस चढ़ने लगे। इस कार्रवाई के दौरान वे पूरी तरह से थक चूके थे। अपने साथी को सुरक्षित स्थान पर लाने के बाद वे दिल का दौरा पड़ने के कारण गिर पड़े। उनमें प्राण फूकने के सारे प्रयत्न असफल रहे और उनकी मृत्यु हो गई।

28. (2570013) सिपाही नवालुरु वेंकटेश्वरलु
मद्रास

2 अप्रैल, 1978 को एक सैनिक, पश्चिम सैक्टर की एक अग्रिम चौकी से डाक दे कर जब वापस आ रहा था तो एक हिम खण्ड उसे ढलान की ओर लुढ़का ले गया। यह सूचना मिलने पर इन्फैंट्री के जवानों का एक दल जिसका नेतृत्व सेकिण्ड लेटिफ्नेंट सुनील चौपड़ा कर रहे थे, उस जवान को खोजने के लिए तैनात किया गया। सिपाही नवालुरु वेंकटेश्वरलु इस खोज-दल के सदस्य थे।

उस खोए हुए सिपाही का शरीर दर्घटना स्थल से दिखाई नहीं दे रहा था इसलिए सिपाही नवालुरु वेंकटेश्वर और सेकिंड लेफ्टिनेंट चौपड़ा उसे खोजने के लिए फिसलन भरी ऊंची चट्टान से रस्सियों के सहारे नीचे उतरे। एक बार सेकिंड लेफ्टिनेंट चौपड़ा फिसल कर ढलान की ओर लुढ़कने लगे परन्तु तभी चुस्त और सतर्क सिपाही वेंकटेश्वरलु सावधान हो गए और इन्होंने उस अफसर को रस्सी के सहारे ऊपर खींच लिया। बढ़ते हुए अंधेरे की वजह से खोज-कार्य स्थगित कर दिया गया और वह दल वापस आ गया।

दूसरे दिन सुबह वह खोजी-दल फिर खतरनाक ढलानों में गया और छः घंटे तक लगातार खोजने के बाद उसे खोए हुए जवान का मृत शरीर मिल गया। स्थिति का जायजा लेने पर शव को उन ढलानों से होते हुए ऊपर लाना सम्भव नहीं पाया गया। अब एकमात्र विकल्प यही था कि सतलुज नदी जिसमें भारी बाढ़ आई हुई थी, को पार करके वापस जाया जाए। नदी के दूसर तरफ रस्सा डालने का निर्णय किया गया। सिपाही वेंकटेश्वरलु ने अपनी जान जोखिम में डाल कर नदी के उस पार रस्सा डाला जिसकी सहायता से यह दल लाश को लेकर चौकी पहुंच गया।

इस प्रकार सिपाही नवालुरु वेंकटेश्वरलु ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

29. (2967525) सिपाही सुखपाल सिंह
राजपूत

सिपाही सुखपाल सिंह 1978 में कैप्टन आर० एन० भट्टाचार्जी के नेतृत्व में उत्तरी क्षेत्र में दूर तक गश्त करने वाले एक गश्ती दल के सदस्य थे। 25 मई, 78 को भारी वर्षा हो रही थी। यह गश्ती दल एक नाले को, जिसमें बाढ़ आई हुई थी, रस्से की सहायता से पार कर रहा था। पहले कैप्टन भट्टाचार्जी ने नाले को लांघना शुरु किया और जैसे ही वे नाले के मध्य में पहुंचे, पानी के अचानक प्रवाह से इनका संतुलन बिगड़ गया और वे नाले में बह गये। सिपाही सुखपाल सिंह, जो गश्त दल के साथ रेडियो आप-रेटर थे, कुछ ही दूरी पर खड़े हुए थे। इन्होंने तुरन्त रेडियो सेट को जमीन पर रखा और अपनी जान की परवाह किए बिना, जहां से कैप्टन भट्टाचार्जी फिसले थे, वहां से 10 गज की दूरी से, एक दम नाले में कूद पड़े। इन्होंने तुरन्त अफसर को पकड़ लिया और तीव्र प्रवाह के बावजूद उन्हें बचा लिया।

इस कार्रवाई में सिपाही सुखपाल सिंह ने अनुकरणीय साहस, सूझबूझ तथा असाधारण कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

30. (9079897) राइफलमैन सादिक अहमद
जाक लाइट इन्फैन्ट्री

23 मार्च, 1978 को चार सिविलियन कुली जम्मू और कश्मीर में नास्ताछुन दर्रे के समीप प्रशासनिक काम पर थे कि अचानक हिमस्खलन हुआ और वे फिसल गए। उन्हें बचाने के लिए सैनिकों का एक दल भेजा गया जिसमें राइफलमैन सादिक अहमद भी थे। लेकिन यह दल भी रास्ते में हिमस्खलन में फंस गया। कुछ देर बाद यह दल सिविलियन कुलियों की खोज और बचाव के लिए फिर चल दिया।

राइफलमैन सादिक अहमद दुर्घटना स्थल पर सबसे पहले पहुंचे और गले तक बर्फ में फंसे हुए दो कुलियों को बाहर निकाल दिया। एक कुली को बेहोशी की हालत में स्वयं उठा कर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया। उस स्थान पर लगा-तार हो रहा हिमस्खलन और भारी बर्फानी तूफान भी इन्हें अपनी राह से नहीं डिगा सका।

इस प्रकार राइफलमैन सादिक अहमद ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

31. (13931225) सिपाही पचकोरी पासवान
आर्मी मेडिकल कोर

सिपाही पचकोरी पासवान 30 मई, 1977 को असम में कालीबाड़ी के निकट हुई रेल-दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए भेजे गये चिकित्सा सहायता दल के सदस्य थे। इन्हें एडजुटेंट ने आदेश दिया कि एक स्ट्रेचर स्क्वाड्रन बनाया जाए और दुर्घटना स्थल तक उनके साथ चलें। इन्होंने स्ट्रेचर स्क्वाड्रन बनाया और बांस से बने बाड़े पर नदी पार कर एडजुटेंट के साथ चल दिए। पानी कंधों तक गहरा था और उसमें बहाव भी तेज था। इस पर इन्होंने घायलों को अपने सिर पर ढोया और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।

इस कार्रवाई में सिपाही पचकोरी पासवान ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और असाधारण कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

32. (14219669) सिगनलमैन दिनेश चन्द्र व्यास
सिगनल्स

8 मार्च, 1978 को अरुणाचल प्रदेश में मसीमपुर छावनी के पास एक गांव में आग लग गई थी। जिन घरों में आग लगी हुई थी उनमें से एक के अन्दर 9 वर्ष का बच्चा फंस गया था। घटना स्थल पर एकत्रित हुई भीड़ में इस

बच्चे के मां-बाप भी मौजूद थे, पर किसी में भी अपनी जान को जोखिम में डाल कर बच्चे को बचा कर लाने की हिम्मत नहीं थी। सिगनलमैन दिनेश चन्द्र व्यास, बचाव कार्य के लिए दुर्घटना स्थल पर भेजे गए सैनिक बचाव दल के सदस्य थे। स्थिति की गम्भीरता को पूरी तरह समझते हुए, ये घर में घुस पड़े और पूरा घर अग्नि से ढह जाने से पूर्व ही बच्चे को निकाल कर ले आये। इसमें सिगनलमन व्यास का शरीर आग से बुरी तरह झुलस गया और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

इस कार्रवाई में सिगनलमैन दिनेश चन्द्र व्यास ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और असाधारण कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

सं० 7-प्रेज/80—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य परायणता अथवा साहस के कार्यों के लिए "वायुसेना पदक/एयर फोर्स मैडल" सहर्ष प्रदान करते हैं।

1. विंग कमांडर वेंकटरमण शंकर (5197)
पलाइंग (पायलट)

विंग कमांडर वेंकटरमण शंकर 29 अप्रैल, 1976 से एक पैकेट स्कवाड्रन की कमान संभाले हुए हैं। स्क्वाड्रन की कमान संभालते ही इन्होंने अपने दल को एक सुगठित और सुदृढ़ संगठन के रूप में बनाने की जरूरत को महसूस किया। इसके परिणामस्वरूप, यह स्क्वाड्रन, उसे सौंपी गई सभी संक्रियात्मक और प्रशिक्षण सम्बन्धी जिम्मेदारियां निभाने में सफल रहा और संक्रियात्मक कार्यकलापों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। उड़ान के प्रति उत्कृष्ट इच्छा और आपात्काल में निर्णायक और सन्तुलित होने के साथ वे अपने स्कवाड्रन के अफसरों तथा कर्मचारियों के मनोबल को बनाये रखने में सफल हुए हैं।

पायलट के रूप में इन्होंने 6800 घण्टे की अबाध उड़ान भरी और पूर्वी तथा दक्षिणी दोनों क्षेत्रों में संक्रियात्मक उड़ान ही 3900 घण्टे की भरी। ये अत्याधिक दुर्गम क्षेत्रों जैसे जम्मू और काश्मीर, लद्दाख, नागालैण्ड, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश में उड़ान भरने की योग्यता रखते हैं। इन क्षेत्रों में उड़ान भरने के लिए व्यावसायिक क्षमता और कौशल की आवश्यकता होती है। इन्होंने अपने मानव और सामग्री के उपयोग का सूक्ष्म ज्ञान तथा स्थिति की शीघ्र विश्लेषण करने की क्षमता से अपने स्क्वाड्रन की कार्यक्षमता को उस उच्च स्तर पर बनाए रखा जितनी इससे पहल कभी नहीं थी। इनके नेतृत्व में यह स्क्वाड्रन उड़ान सुरक्षा की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ स्क्वाड्रन चुना गया और 1977 वर्ष के लिए उसे उड़ान सुरक्षा ट्राफी से पुरस्कृत किया गया। इन्होंने तीन अलग-अलग वायुयानों पर सर्वोच्च "ए/मास्टर ग्रीन" की उड़ान कुशलता प्राप्त की और इसे पिछले 14 वर्षों से बरकरार रखा है।

इस प्रकार विंग कमांडर वेंकटरमण शंकर ने नेतृत्व, उच्च व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

2. विंग कमांडर कमल खन्ना (5795)
पलाइंग (पायलट)

12 अगस्त, 1977 को विंग कमांडर कमल खन्ना को नेट विमान के इंजन की जाँच करने को कहा गया। कलाबाजी के साथ विमान उड़ाते समय इन्होंने देखा कि विमान के जेट पैका का तापमान ऊंचा हो गया है इसलिए उसे तुरन्त वापिस अड्डे पर लाने का फैसला किया। उतरते समय इन्होंने यह महसूस किया जैसे कि विमान के अगले हिस्से में धक्का लगा हो और इंजन की गति कम हो गई तथा जेट पैक का तापमान भी कम होने के बजाय बढ़ता जा रहा था। पूरे इंजन में खराबी आने के अलावा उसका ब्रेक भी खराब हो गया था और तेल का दाब भी बिगड़ गया था। इन सब खराबियों के बावजूद विंग कमांडर कमल खन्ना ने धैर्य से काम लिया और विमान से बाहर कूद पड़ने के बजाय उसे जमीन पर उतारने का निश्चय किया। ऐसी गम्भीर स्थिति में इन्होंने बड़ी कुललता से काम लिया और विमान को सुरक्षित नीचे उतार दिया।

इस कार्रवाई में विंग कमांडर कमल खन्ना ने अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर पेरपू श्रीराम मूर्ति (6555)
वैमानिकी इंजीनियरी (मैकेनिकल)

स्क्वाड्रन लीडर पेरपू श्रीराम मूर्ति 1 नवम्बर, 1962 को भारतीय वायुसेना में भर्ती हुए और एक परिवहन विंग के मुख्य इंजीनियरी अफसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इन्होंने अपनी प्रबन्ध-क्षमता तथा गहन व्यावसायिक ज्ञान से पुराने पड़ते हुए डकोटा विमानों को काम करते रहने की अच्छी हालत में रखने और सुरक्षित रूप से उड़ान भरते रहने के लिए सराहनीय योगदान दिया।

4 नवम्बर, 1977 को उस विमान से जिसमें प्रधानमंत्री यात्रा कर रहे थे, संचार सम्पर्क टूट जाने का समाचार मिलते ही स्क्वाड्रन लीडर मूर्ति ने बड़ी तेजी से बचाव कार्य के लिए यथाआवश्यक विशिष्ट तथा अन्य प्रकार के वाहनों और पर्याप्त आदमियों तथा उपस्करों को दर्घटना स्थल पर भेजने की व्यवस्था की। दुर्घटना स्थल पर पहुंचने के बाद इन्होंने सबसे पहले यह इंतजाम किया कि वहां आग न फैले और कोई विस्फोट न हो, इन्होने तुरन्त वायुयान के चारों तरफ बिखरे ईंधन से तर-ब-तर जमीन की ओर बढ़ते हुए उन सभी बचाव तथा सुरक्षा कार्मिकों को हटाया जिनके हाथों में आग की नग्न मशालें और मिट्टी के तेल की बत्तियां आदि थी। इन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर दुर्घटनाग्रस्त विमान के चारों तरफ तेल तथा मुड़े हुए ढांचों के बीच तंग गलियारे से विमान के अन्दर प्रवेश किया और बिजली के तारों को अलग करने के साथ-साथ यह सुनिश्चित किया कि चार्ज की गई बोतल से कोई विस्फोट भी न हो। ईंधन टैंकों तक पहुंचना भी खतरे से खाली नहीं था क्योंकि विमान अपने बीच वाले भाग पर टिका हुआ था और काफी अंधेरा भी

था । इस सबके बावजूद इन्होंने क्षतिग्रस्त ईंधन लाइनों के उन भागों को बन्द किया जहां से ईंधन गिर रहा था।

दुर्घटना स्थल की ओर जाने वाले तंग मार्ग में एक बचाव गाड़ी तथा एक एम्बुलेंस के फंस जाने के करण दुर्घटनाग्रस्त विमान तक पहुंचने का रास्ता बन्द हो गया था । इससे बचाव कार्य में बड़ी रुकावट आई । प्रधानमंत्री को ले जा रही कार भी वहां लगभग आधे घण्टे तक फंसी रही । स्क्वाड्रन लीडर मूर्ति ने तब रिकवरी वाहन, उपस्करों तथा आदमियों को तुरन्त इकट्ठा किया और बंद रास्ते को वाहनों के लिए साफ करवाकर तेजी से बचाव कार्य सम्पन्न करने में मदद की।

इस कार्रवाई में स्क्वाड्रन लीडर पेरपू श्रीराम मूर्ति ने व्यावसायिक कुशलता, दक्षता, साहस एवं असाधारण कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. स्क्वाड्रन लीडर हरबिंदर सिंह सिधू (7682) फ्लाइंग (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर हरबिंदर सिंह सिधू जनवरी, 1974 से एक पैकेट एयरक्राफ्ट स्क्वाड्रन में तैनात हैं। वे एक अर्हता-प्राप्त फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर हैं और मार्च, 1973 से पैकेट वायुयानों के बारे में प्रशिक्षण दे रहे हैं। इन्होंने अब तक कुल 4168 घण्टों की उड़ान भरी है जो स्पृहणीय है । इनमें से 1100 घण्टे प्रशिक्षण सम्बन्धी उड़ानों पर लगाए गये । इन्होंने स्क्वाड्रन के परिचालन और वर्गीकरण की स्थिति में यथेष्ट सुधार किया है । इसके परिणामस्वरूप उन पायलटों को प्रशिक्षण देने का काम भी पूरा किया, जो पैकेट वायुयानों के खराब होने के कारण प्रशिक्षण नहीं ले पाए थे । इसके अलावा वर्ष 1977 के लिए वायुसेना के सभी परिवहन स्क्वाड्रनों में इनका स्क्वाड्रन दूसरा सर्वश्रेष्ठ वर्गीकृत स्क्वाड्रन घोषित किया गया।

6 अप्रल, 1978 की रात में दुहरी जांच उड़ान के दौरान इन्होंने एक ऐसी असाधारण आपात स्थिति का सामना किया जो पैकेट वायुयानों के उड़ान के इतिहास में कहीं देखने में नहीं आई। 300 फुट एडवांस ग्राउंड लेंडिंग पर चक्कर काटते समय जब उड़ान भरने के लिए वायुयान के फ्लैप ऊंचे उठाए गए तो स्टार बोर्ड आउटबोर्ड फ्लैप दाहिनी ओर झुक गया और उससे स्टारबोर्ड एलरोन ऊपर उठ गया और एलरोन पर नियंत्रण रखने वाला भाग बंद हो गया । वायु-यान बुरी तरह से स्टारबोर्ड की ओर लुढ़का । स्थिति की गंभीरता से विचलित हुए बिना, इन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और पोर्ट इंजन की गति कम करने का फैसला करके वायुयान को केवल रडारों की सहायता से रनवे पर ला उतारा । इस प्रकार इन्होंने वायुयान तथा उसके कर्मीदल को बचा लिया । इससे पहले भी उस समय इन्होंने इसी प्रकार अपने उच्च व्यावसायिक कौशल और सूझ-बूझ का परिचय दिया था जब एक रात वायुयान के जमीन से उड़ने के तुरन्त बाद और ऊंचाई न पकड़ पाने के कारण रनवे पर वापिस लाने में सफल हुए।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर हरबिंदर सिंह सिधु ने साहस, व्यावसायिक कौशल और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

5. स्क्वाड्रन लीडर अशोक आनन्द थोसर (8209) फ्लाइंग (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर अशोक आनन्द थोसर, मई, 1976 से दक्षिणी क्षेत्र में आपरेशनल हेलीकाप्टर यूनिट में काम कर रहे हैं । इन्होंने जो 3600 घण्टे की उड़ान भरी उसमें से 2500 घण्टे की अवधि उड़ान दुर्गम क्षेत्रों में हेलीकाप्टरों पर भरी। इनके नेतृत्व में इनकी यूनिट ने सभी संक्रियात्मक कार्य बड़ी सफलता से पूरे किए तथा अबाध उड़ान भरने के कारण 1977 के वर्ष में उड़ान सुरक्षा ट्राफी हासिल की।

इन्होंने अनेक संक्रियात्मक कार्य बड़ी सफलतापूर्वक निभाये, इन कार्यों में हैं :—विशिष्ट व्यक्तियों को कार्यक्रमानुसार सफलतापूर्वक ले जाना, संभारिकी सहायता, राहत कार्य तथा जख्मियों को उठाना । अगस्त, 1977 में इन्होंने दिल्ली के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में, बचाव कार्य करते हुए चेतक हेलीकाप्टर के नेता के रूप में असाधारण कोटि की व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया । पुनः 4 सितम्बर, 1977 को ये गम्भीर रूप से बीमार जवान को अनुपयुक्त हैलीपैड से 13,500 फुट की ऊंचाई से सुरक्षित ले आये तथा उसकी जान बचाई ।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर अशोक आनन्द थोसर ने अदम्य साहस, व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

6. स्क्वाड्रन लीडर गोपालसमुद्रम महादेवन विश्वनाथन (9056) फ्लाइंग (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर गोपालसमुद्रम महादेवन विश्वनाथन को दिसम्बर, 1964 में वायु सेना में कमीशन प्रदान किया गया। ये जुलाई, 1976 से सुपर सैनिक लड़ाकू विमान की अग्र-पंक्ति में फ्लाइट कमांडर का कार्यभार संभाले हुए हैं । इन्हें 1980 घण्टे तक विभिन्न किस्म के वायुयानों में उड़ान भरने का श्रेय प्राप्त है । इसम से 1625 घन्टे तक इन्होंने जैट लड़ाकू विमान पर उड़ानें भरी और बिना दुर्घटना के उड़ान भरने का रिकार्ड स्थापित किया । इनके इस बेदाग सेवा-कार्य के लिए वायु सेना अध्यक्ष ने 26 जनवरी, 1978 को इन्हें प्रशस्ति पत्र भी दिया।

16 मार्च, 1978 को करीब 12 बजे जब ये स्टेशन पर सीनियर फ्लाइंग सुपरवाइजर की हवाई यातायात नियंत्रण संबंधी ड्यूटी पर थे, तो जैसे ही एक लड़ाकू विमान का पायलट अपनी प्रशिक्षण उड़ान समाप्त करके अपना विमान वहां उतारने लगा कि एक पक्षी विमान के उतरने से कुछ ही सैकन्ड पहले बहुत कम ऊंचाई पर उससे टकरा गया । उस युवा पायलट ने वायुयान से नीचे कूदने का फैसला किया और इस बारे में उसने रेडियो टेलिफोन पर सूचना दी । स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथन पूरी तरह से सतर्क थे । इन्होंने विमान की बहुत कम ऊंचाई को देखते हुए यह महसूस किया

कि उससे बाहर कूदना खतरे से खाली नहीं है । उन्होंने पायलट को जबरदस्ती सीधे आगे उड़ान भरने की सलाह दी और उसे नीचे उतार लाने में उसका मार्ग दर्शन किया । इनकी सूझ-बूझ और सही सलाह के फलस्वरूप युवा पायलट का अमूल्य जीवन और वह मूल्यवान वायुयान बचाया जा सका ।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर गोपालसमुद्रम महादेवन विश्वनाथन ने अनुकरणीय व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

8. फ्लाइट लैफ्टिनेंट शैलेन्द्र प्रताप सिंह (12036)
फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लैफ्टिनेंट शैलेन्द्र प्रताप सिंह नवम्बर, 1976 से हैलिकाप्टर यूनिट में काम कर रहे हैं। ये लगभग 1800 घंटे की अवधि उड़ान भर चुके हैं । 1978 में इन्होंने लगभग 400 घंटे की उड़ान भरी । इस उड़ान का अधिकांश भाग संक्रियात्मक कार्यों से संबंधित था ।

अगस्त-सितम्बर, 1978 में कानपुर, लखनऊ और वाराणसी में बाढ़ राहत कार्यों में फ्लाइट लैफ्टिनेंट शैलेन्द्र ने लगभग 100 घंटे की उड़ानें भरीं । स्वतंत्र टुकड़ी के कमांडर होने के नाते इन्होंने अधिकतम उड़ाने भरी ताकि राहत कार्य को अधिक कारगर ढंग से किया जा सके । अपने सुख-सुविधा की चिन्ता किए बिना, इन्होंने अपना कार्य बहुत अच्छे ढंग से निभाया और सौंपे गये कार्य को पूरा करने के लिए काफी देर तक अथक परिश्रम करते रहे ।

इस प्रकार फ्लाइट लैफ्टिनेंट शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने असाधारण दृढ़ निश्चय, व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

9. फ्लाइट लैफ्टिनेंट बिजेन्द्र सिंह सिवाच (12413)
फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लैफ्टिनेंट बिजेन्द्र सिंह सिवाच ने जून, 1970 में भारतीय वायु सेना में कमीशन प्राप्त किया । कमीशन मिलने के समय से ही इन्होंने विभिन्न हैलीकाप्टर यूनिटों में प्रशंसनीय कार्य किया है । इस समय ये एक वायु ओ० पी० स्क्वाड्रन में फ्लाइट एडजुटेंट का कार्य कर रहे हैं। अपने स्क्वाड्रन के लिए ये एक बहुत ही उपयोगी व्यक्ति हैं। कई बार इन्होंने उड़ान संबंधी ऐसे भी कार्य किए जो उनकी ड्यूटी में नहीं आते ।

7 जुलाई, 1977 को इन्हें मुन-कुन चोटी के क्षेत्र में शफाट हिमनदी में फंसे थल सेना के पर्वतारोही दल के पांच सदस्यों को बचाने का काम सौंपा गया । भू-भाग का ज्ञान न होते हुए भी अपनी व्यवसायिक कुशलता के आधार पर ये 1700 फुट की ऊंचाई पर जख्मियों का पता लगाने और उन्हें सुरक्षित वापस लाने में सफल हुए । यह कार्य बहुत जोखिमपूर्ण था और मौसम भी बहुत खराब था । अतः गंभीर रूप से बीमार इन पांच व्यक्तियों को लाने के लिए इन्हें तीन बार उड़ान भरनी पड़ी । इसमें 6 घंटे से भी अधिक समय तक उड़ान भरनी पड़ी ।

इस प्रकार फ्लाइट लैफ्टिनेंट बिजेन्द्र सिंह सिवाच ने उच्च व्यावसायिक कुशलता, दृढ़ निश्चय, साहस और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

9. सं० 400800 जूनियर वारंट अफसर खामन सिंह सुब्बा
इंस्ट्रूमेंट फिटर

जूनियर वारंट अफसर खामन सिंह सुब्बा को हैलीकाप्टर टुकड़ी का जे० डब्ल्यू० ओ० इन-चार्ज नियुक्त किया गया था। 2 सितम्बर, 1978 को इस टुकड़ी के पास केवल एक ही हैलीकाप्टर था, जिसे शाम के 2.30 बजे से 6.00 बजे तक पश्चिम बंगाल के शहर मिदनापुर और इसके आस-पास के इलाकों में बाढ़ राहत कार्य पर लगाया गया था । 3 सितम्बर, 1978 की सुबह तक इस हैलीकाप्टर की सफाई धुलाई की गई तथा फिटनेस देखी गयी और फिर इस पर राहत कार्य शुरू कर दिया गया । उसी दिन 5 और चेतक हैलीकाप्टरों के पहुंच जाने से राहत कार्यों में तेजी आ गई। यह टुकड़ी अपने 6 हैलीकाप्टरों से 9 सितम्बर, 1978 तक राहत कार्य में तत्परता से लगी रही । सभी ने इनके कार्य की प्रशंसा की ।

इन विमानों के ठीक रख-रखाव में जूनियर वारंट अफसर सुब्बा ने जो अथक परिश्रम किया उसके फलस्वरूप ही यह कार्य पूरा किया जा सका । अपनी व्यवहार और व्यावसायिक कुशलता से इन्होंने बहुत ही कम साधनों और सीमित कार्मिकों का कारगर ढंग से उपयोग किया । इन्होंने स्वयं काम करके अपने सहयोगियों का मनोबल ऊंचा उठाया । कई-कई घंटे तक ये अपने साथियों के साथ रह कर उनका मार्ग दर्शन करते रहे और उनका काम देखते रहे । इसका फल यह हुआ कि हैलीकाप्टर जल्दी-जल्दी और सुव्यवस्थित ढंग से काम करते रहे ।

इस प्रकार जूनियर वारन्ट अफसर खामन सिंह सुब्बा ने दृढ़ निश्चय, नेतृत्व, व्यावसायिक कुशलता और उच्च कोटि की कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

सं० 8-पेज/80-राष्ट्रपति निम्नलिखित अधिकारी को उनकी असाधारण कर्त्तव्यपरायणता के लिए "वायु सेना पदक/एयर फोर्स मडल का बार" सहर्ष प्रदान करते हैं :—

विंग कमांडर मंजीत सिंह ढिल्लों (7021), वीर चक्र, वी० एम०
फ्लाइंग (पायलट)

विंग कमांडर मंजीत सिंह ढिल्लों ने वायु सेना में 1963 में कमीशन प्राप्त किया । इन्होंने विदेशों में हैलीकाप्टर में अग्रिम पाठयक्रम पूरे किए हैं। इस समय ये एक हैलीकाप्टर बैस की कमान कर रहे हैं। ये हैलीकाप्टर पर 4500 घंटे से अधिक की उड़ान भर चुके हैं। इन्होंने 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्ध में हिस्सा लिया है । 1971 के भारत-पाक युद्ध में बहादुरी के लिए इन्हें वीर चक्र प्रदान किया गया था ।

अगस्त, 1978 में भागीरथी नदी में अभूतपूर्व बाढ़ आ गई । विंग कमांडर मंजीत सिंह ढिल्लों ने बचाव कार्य किया और इनके मार्ग दर्शन में बाढ़ में फंसे तीर्थयात्रियों के लिए बहुत ही थोड़े समय में 35 टन खाद्य पदार्थ तथा अन्य सामग्री विमानों से पहुंचाई गई । इन्होंने 362 बूढ़े तथा असहाय तीर्थ-यात्रियों और स्कूल तथा कालेजों के विद्यार्थियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के काम का संचालन भी किया ।

भागीरथी नदी में बाढ़ आने के तुरन्त बाद 3 सितम्बर, 1978 को आकाशवाणी में चेतावनी दी गई कि सहारनपुर, करनाल और दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में भी बाढ़ आ सकती है । विंग कमांडर मंजीत सिंह ढिल्लों ने अनुमान लगा लिया कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र में भी बचाव कार्य की जरूरत होगी । यमुना नदी में पानी का चढ़ाव देखने के लिए इन्होंने तत्काल हैलीकाप्टरों को यमुना नदी के ऊपर उड़ान का आदेश दिया और बाद में यमुना नदी में पानी कम होने तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा क्षेत्रों में बचाव और विमान से सामान डालने वाले पूर्ति मिशनों का संचालन किया। अगस्त, 1978 के मध्य में बचाव कार्य शुरू होने के समय से सितम्बर, 1978 के मध्य में इसके पूरा होने तक विंग कमांडर ढिल्लों ने अथक परिश्रम किया। इनके दृढ़ निश्चय और निर्भीक प्रयास के फलस्वरूप ही प्रभावित क्षेत्रों में कम से कम समय में बचाव कार्य किया जा सका ।

इन सभी कार्यों में विंग कमांडर मंजीत सिंह ढिल्लों ने असाधारण पहल-शक्ति, व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

के०सी० मादप्पा, राष्ट्रपति के सचिव

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 27 दिसम्बर 1979

संकल्प

सं० ए०-11013/194/79-प्रशासन-4.—दिनांक 28-9-1978 के संकल्प सं० ए० 11013/181/77-प्रशा०-4.— के पैरागाफ 4, संकल्प सं० ए०-11013/181/77-प्रशा० 4 दिनांक 26 मार्च, 1979 तथा संकल्प सं० ए०-11013/181/77-प्रशा० 4 दिनांक 23 अगस्त, 1979 में निहित आदेशों में आंशिक संशोधन करते हुए, भारत सरकार ने चीनी पर केन्द्रीय उत्पादन शुल्क में छूट देने सम्बन्धी योजना (पुनरीक्षण) समिति को अपनी रिपोर्ट मार्च 1980 तक पेश करने का समय दे दिया है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति सभी सबन्धितों को भेजी जाए और इसे सामान्य जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में में प्रकाशित किया जाये।

रवि दत्त शर्मा, अवर सचिव

कृषि और सिंचाई मंत्रालय

(कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 24 दिसम्बर, 1979

सं० 26012/5/79-एफ० वाई०(टी०-1).— कृषि और सिंचाई मंत्रालय के कृषि विभाग के दिनांक 4 अप्रैल, 1979 के संकल्प संख्या 26011/1/77-एफ०, वाई० (टी०-1) के अनुसरण में राष्ट्रपति निम्नलिखित तीन अन्तर्देशीय राज्यों को केन्द्रीय मात्स्यकी बोर्ड के सदस्यों के रूप में मनोनीत करते हैं :—

1. मात्स्यकी मंत्री, बिहार सरकार, पटना
2. मात्स्यकी मंत्री, त्रिपुरा सरकार, अगरतला ।
3. मात्स्यकी मंत्री, हिमाचल प्रदेश सरकार, शिमला ।

केन्द्रीय मात्स्यकी बोर्ड में इनकी नियुक्तियों की अवधि इस अधिसूचना के जारी होने की तारीख से तीन वर्ष के लिये है ।

आर० के० सक्सेना, संयुक्त सचिव

सिंचाई विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 28 दिसम्बर 1979

सं० 8(3)/78-सं० बे०.—कृषि कमीर सिंचाई मंत्रालय (सिंचाई विभाग) की अधिसूचना सं० 7(6)/78-सं० बे०, दिनांक 24-6-78 का उपान्तरण करते हुए यह फैसला किया गया है कि आयुक्त (गंगा बेसिन) सिंचाई विभाग के स्थान पर सिंचाई विभाग के सलाहकार, (पी० पी०), गंडक समन्वय समिति के सदस्य होंगे। यह निर्णय तत्काल लागू लागू होगा ।

टू० रंगनाथन, अवर सचिव

दिनांक 3 दिसम्बर 1979

सं० एफ० 17-27/76-तक-1.—समय-समय पर यथासंशोधित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 (1956 का अधिनियम संख्या 3) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए भारत सरकार शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, आयोग की सलाह पर एतद्द्वारा यह घोषणा करती है कि आयोजना तथा वास्तुकला सोसाइटी द्वारा संचालित योजना तथा वास्तुकला विद्यालय, नई दिल्ली को जो कि उच्च शिक्षा की एक संस्था है उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिये एक विश्व विद्यालय समझा जायगा ।

सी० एस० झा,
शिक्षा सलाहकार (तक)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1979

No. 6-Pres./80.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Major DAYA RAM (IC 11128),
Army Ordnance Corps.

Major Daya Ram, Officer Commanding of an Ammunition Company, was detailed to carry out the clearance of some ammunition points in the Northern Sector where the entire first line ammunition of Armoured Regiments was involved in a fire and subsequent explosion. The officer with his team organised the clearance in such a way that it was possible to rescue 136 tonnes of unaffected ammunition in the shortest possible time. He started lifting the dangerous unexploded shells, fuzes and other explosives with his own hand thereby setting personal example for his team. On three occasions, while he was carrying out demolition of extremely dangerous fuzes, an explosion took place causing fire. The officer, in the midst of danger to his life, carried on his job undeterred. He worked tirelessly for long hours under great mental and physical strain. On the night of 7/8th June, 1977, he worked on clearing the rail lines connecting Jammu Tawi and Pathankot. His ceaseless efforts to clear the rail lines of explosives during the night, made it possible to resume rail traffic.

Major Daya Ram thus displayed great courage, determination, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

2. Major BRIJENDRA PRAKASH (IC 11055),
Intelligence Corps.

Major Brijendra Prakash has been commanding an infantry Company, deployed in Nagaland since May, 1975. He established useful contacts with important underground personalities in Nagaland by virtue of his tact, initiative and sincerity of purpose and created a good rapport with Central and State agencies, civil administration officials as well as local personalities. His hard work and efforts helped in obtaining the surrender of a number of important underground leaders. He personally obtained the surrender of three underground persons. He proved of assistance to the Government agencies conducting the negotiations with the leaders of the underground Nagas for the 'Shillong Accord'.

The Officer has also contributed to the creation of a favourable image of the Security Forces in Nagaland, in the eyes of the underground by his tactful handling of important hostile leaders as well as by his patient and helpful attitude shown to the villagers who came in contact with him. Many a time, the officer had to move unescorted and through difficult terrain and adverse weather conditions, to personally supervise and motivate his subordinates and others in border and interior areas.

Major Brijendera Prakash has thus displayed courage, initiative, determination and devotion to duty of an exceptional order.

3. Major RAJENDRA PAL JAIRATH (IC 18791),
Engineers.

In February, 1978, a Bomb, Disposal Platoon was entrusted with the task of disposing of Japanese bombs of World War II vin-tage dumped in Port Blair. Major Rajendra Pal Jairath, Officer Commanding of the platoon, commenced the work during April, 1978. He carried out a detailed reconnaissance and made a careful study of the bombs and their mechanism. The disposal of the high explosive bombs was to be carried out in a manner that no damage was caused to the lives and property of the people living in the area.

The officer guided the operation personally throughout. He decided to carry out a controlled blast in order to save civilian life and property. Having ensured maximum safety, he disposed off the bombs by demolition in a restricted area. As a result of his careful and meticulous planning, the blast and splinter effects were restricted and there was no damage to civilian life and property.

In this operation, Major Rajendra Pal Jairath displayed exemplary courage, remarkable presence of mind, determination and devotion to duty of an exceptional order.

4. Major KUNWAR RAMBIR SINGH TOMAR
(IC 21693),
Sikh.

Major Kunwar Rambir Singh Tomar was serving a Wing Commander of an Assam Rifles battalion in South Vanlaiphai area. On 16th June, 1977, information was received that armed members of a gang had crossed the international border. Major Tomar immediately moved his troops and intercepted the gang. As a result of this swift and determinded action, six insurgents were captured and a large quantity of arms and ammunition was seized.

In this action, Major Kunwar Rambir Singh Tomar displayed undaunted courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

5. Major RAVINDRA SHARMA (MR 2356),
Army Medical Corps.

On 23rd April, 1977, two officers who were coming to Leh from Partapur in a jonga, were stranded near Khadungle Pass due to heavy snow. On receiving the information, the Sector Headquarters despatched a team of three officers and five other Rank the same day to rescue the officers.

The rescue party was led by Major Ravindra Sharma, Senior Medical Officer of a Scouts battalion. The team travelled in a vehicle upto the place where the officers were stranded and thereafter proceeded further on foot. The temperature was well below zero degree and the intense snow blizzard had reduced the visibility almost to nil. One officer and four other rank had to be sent back as they were exhausted due to severe cold and high altitude. It did not, however, affect the resolve of Major Sharma who, along with the remaining members of his team, inched his way forward through waist deep snow. Braving all the odds, the party continued to move forward and reached the stranded jonga in the early hours of the next morning. The rescue team rescued the officers from the jonga. The rescued officers and the driver of the jonga had developed mountain sickness and, due to exhaustion, were in very low spirits. The courage of the rescue party, particularly that of their leader, instilled confidence and strength in them. They were helped to move back slowly to North Pulu.

In this action, Major Ravindra Sharma displayed exemplary courage, determination, leadership and devotion to duty of an excellent order.

6. Major MANJIT SINGH (IC 25966),
Maratha Light Infantry.

On 17th February, 1978, a huge avalanche came down at Mana where a scouts company was located for operational deployment during winter. The avalanche caused heavy destruction by uprooting and damaging many buildings. A building, which had a total of seven persons inside, suddenly collapsed under the heavy weight of snow and debris caused by the avalanche.

Major Manjit Singh, who was commanding the Scouts Company, heard a loud blast which shook his barrack and dazed him for a while. On learning that a big avalanche had struck at some of the ammunition and living barracks of his company, he immediately collected some men and rushed to the site of the accident. His sole concern was to save the lives of his men who might have been trapped because of the avalanche. Although the avalanche was still active, he reached the barrack where the seven men were buried and started the rescue work. Despite an injury to his ankle, he continued his efforts for about an hour to retrieve the individuals affected. He rescued five of them while the remaining two managed to come out themselves. Of these five individuals only one could be saved.

In this action Major Manjit Singh displayed courage, promptitude and devotion to duty of a high order.

7. Major SHYAM SUNDER NARULA (IC 25088),
Punjab.

Major Shyam Sunder Narula was the leader of a special patrol from Harsil to Sugar sector during the month of October, 1977. The patrol undertook a cross country movement over extremely difficult and dangerous high altitude mountains on way from Harsil to Sugar sector and returned back through the same route in the month of October.

On 6th October, 1977, when the patrol was crossing the Lunkhaga pass over steep rock slopes, a number of small ropes had to be tied to climb on top of the pass. Naik Mohan Singh was the last man to climb up to the rope when one of the knots joining the ropes gave way and Naik Mohan Singh rolled down into a deep crevasse. Since all the members of the party had already reached the top of the pass, there was no one at the base who could rescue Naik Mohan Singh, Major Shyam Sunder Narula, the leader of the patrol along with two other Ranks went down using ice axes to save their comrade. After two hours of gruelling efforts and despite continuous snow fall and blizzard, Major Narula succeeded in rescuing him. After giving necessary first aid, the individual was brought across the pass safely.

In this action, Major Shyam Sundar Narula displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

8. Captain ANJAN KUMAR BHATTACHARJEE (IC 32015), Ladakh Scouts.

Captain Anjan Kumar Bhattacharjee served with a Scouts battalion from October, 1975 to June, 1977. He was deployed at a high altitude post and, undeterred by severe cold, he accomplished every task given to him. He led four consecutive patrols to Karakoram pass during the period, covering approximately 180 Kilometres on each occasion. On one occasion an officer of the post fell ill and could not be evacuated for six days. Captain Bhattacharjee looked after the ailing officer devotedly and proved to be a great source of encouragement to the sick officer as well as to others at the post.

During Captain Bhattacharjee's stay at the post, the battalion undertook an expedition to Sati Kangri peak in Karakoram Ranges. He was the deputy leader of the expedition, and was the driving force behind the success of the expedition. During the climb, a comrade who had a dangerous was injured and became unconscious. At great risk to his own life, Captain Bhattacharjee rescued the comrade.

Captain Anjan Kumar Bhattacharjee thus displayed courage, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

9. Captain SYED YASIN (IC 28990), Engineers.

Captain Syed Yasin of an Engineer Regiment was employed in rescue and relief operations during floods in Midnapore District, West Bengal. He was ordered to rush to Ghattal town which was flooded by the waters of the Silal river. The road to the town was under water and the current was very fast. He loaded his boats and battled his way through the strong current. On the way, he heard cries of men and women perched on trees. It was already getting dark and Captain Syed Yasin and his crew were fatigued. Despite this, the boat was steered towards the people who were desparately clinging to tree trunks. A rope was taken upto the nearest tree for securing the boat in chest deep water. Thereafter, the men and women were carried by jawans from these trees in chest deep fast running water to the boat and taken to safety to a nearby Beltala village.

On reaching Beltala, Captain Yasin was confronted by a more difficult situation when he came to know that the road he had travelled by earlier, had got submerged under a sheet of water. He and his detachment were, therefore, completely cut off. The officer took a bold decision to reach the nearest Bund and march back to the main base. After an arduous march through chest deep water and along a narrow bund in the dark, he and his men reached safely to the base. He conveyed the news of the flood situation in Ghattal area and without loss of time, rushed back with supplies for his detachment. During this period, although he remained without rest and sleep for 48 hours, he stuck to his rescue and relief work. His determined efforts resulted in the rescue of hundreds of people. He also distributed 27 boat-loads of relief supplies dropped by air in the area of his operation.

Captain Syed Yasin thus displayed great courage, determination, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

10. Captain JUDE LAWRENCE CRUZ (SS 26451), Parachute Regiment.

Captain Jude Lawrence Cruz was detailed as a Deputy leader of an expedition to the twin peaks of Mun and Kun in Ladakh in July, 1978. Even at the preparatory stage of the expedition, his contribution in selection and training of the team, administrative preparations and establishment of the Base Camp, was praiseworthy. His mental robustness during the ascent was responsible for the buoyant atmosphere among the team mates which is considered essential for the success of such an assignment. He led the team up to the assault camp where the leader of the expedition collapsed and met with a tragic end.

Thereafter, Captain Cruz assumed the leadership of the team and was faced with the difficult and delicate task of sustaining the morale of the team which had been adversely affected due to sudden demise of the team leader. The dead body of the leader was to be evacuated to the administrative base, a work which involved a descent of 3,400 feet. The task was willingly undertaken by Captain Cruz. He, single handedly, brought it down and returned to the assault camp. This act alone infused a new spirit in the members of the team and, despite inhospitable terrain and inclement weather, Captain Cruz was successful in putting the entire team on the Kun peak, in one single day, a feat unheard of.

In this operation, Captain Jude Lawrence Cruz displayed exemplary courage, determination, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

11. Second Lieutenant SUNIL CHOPRA (IC 34538), Madras.

On 2nd April, 1978, one of the Other Ranks, while returning after delivering the mail at a forward post, was swept by an avalanche. On receiving the information Second Lieutenant Sunil Chopra alongwith a party of 15 Other Ranks, moved to the site of the accident. On reaching the site, they did not see the missing jawan. He and one Other Rank then went down the cliffs with the help of ropes. At one stage the officer himself fell down and was almost going down the slope but was pulled back by the Other Rank with the help of a rope. Undeterred, the officer proceeded further with courage but the body of the jawan could not be located and the search was discontinued that day because of the looming darkness.

Early in the morning, on the following day, he again led his men in search of the jawan. With the help of ropes, his party went down the slopes over loose rocks and after a search of nearly six hours, the body of the jawan was traced. As it was not possible to bring the body back over these slopes, it was planned to bring it by crossing the river Sutlej which was then in spate. He managed to get the rope across the river which helped the entire party to cross the river with the body of the jawan.

In this action, Second Lieutenant Sunil Chopra displayed courage, determination, leadership and devotion to duty of an exceptional high order.

12. JC 34194 Subedar Major MATHURA PRASAD, Engineers.

Subedar Major Mathura Prasad joined the Beas Sutlej Link Project on deputation in July, 1976. He was given an assignment which involved installation, erection, and welding of steel penstocks of Dehar Power Plant along a hazardous route. For continued good progress in a difficult terrain, special skill and enthusiasm of the working force was essential. He maintained an admirable progress throughout and deserves all the credit for the completion of the job entrusted to him. This enabled the commissioning of a long water conductor system joining Beas and Sutlej rivers in time.

Subedar Major Mathura Prasad thus displayed courage, determination, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

13. JC 66197 Subedar BISHAMBER SINGH, JAK Rifles.

Subedar Bishamber Singh was in Command of an isolated post, close to the Line of Control in the northern sector. The post was completely dominated by the Pakistani forward line of defence.

In spite of all the constraints, Subedar Bishamber Singh undertook regular patrolling and provided leadership to his men which deterred intruders into our territory. He also won the good will and confidence of the people on our own side to our positive advantage. His efficient and undaunted mode of functioning prevented violation of the Line of Control in a significant manner.

Subedar Bishamber Singh has thus displayed undaunted courage, initiative, determination and devotion to duty of an exceptional order.

14. JC 48993 Subedar RAMA SHANKAR TIWARI, Mahar.

On the 3rd August, 1978, the waters of the Sutlej overflowed its bank on the side of Ludhiana District and caused large scale devastations. A unit of the Mahar Regiment was promptly requisitioned to evacuate the marooned people from the villages surrounded by the flood waters. Subedar Rama Shankar Tiwari of this unit was with the boat being coxswained by the Officer Commanding of the Unit.

Due to submerged debris, navigation of the boat was difficult. The propeller of the out-board motor, which struck against submerged debris, was damaged and the boat with the rescue people in it, was left at the mercy of the fast flowing water. Subedar Rama Shankar Tiwari, in complete disregard to his own safety, jumped into the water and, with the help of a rope, managed to pull the boat to safety.

In this action, Subedar Rama Shankar Tiwari displayed exemplary courage, determination, initiative and devotion to duty of an exceptional order.

15. JC 66476 Naib Subedar KISHAN PAL SINGH, Army Ordnance Corps.

In June, 1977, Naib Subedar Kishan Pal Singh was detailed alongwith an officer, for the clearance of an Ammunition Point in the Northern Sector where fire and explosion had taken place.

He lifted the dangerous ammunition with his own hand and removed it to the nearby site where it could be destroyed. By working ceaselessly for long hours under great physical and mental strain in the face of extreme danger to his own life, he not only enabled the clearance of the site in a record time, but was also instrumental in saving ammunition worth several lakhs.

In this action, Naib Subedar Kishan Pal Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

16. JC 75907 Naib Subedar MANOHAR JOSHI, Kumaon.

A scouts battalion, located at Mana, was given the task of evacuating Sir Edmund Hillary who fell ill while scaling Nar Parbat during his 'Ocean to Sky' expedition. On 14th October, 1977, Naib Subedar Manohar Joshi was detailed to take out a patrol with first aid equipment, including oxygen cylinders, two stretchers, smoke candles and wireless sets to assist in the rescue of Sir Hillary. The task was extremely difficult and involved climbing from Mana to a height of 17,800 feet where Sir Hillary was then located. He left Mana on 15th October, 1977, and started climbing vertically on a route which involved steep rock faces, loose boulders and glaciers. He reached the place the same day and immediately provided first aid to Sir Hillary. He thereafter prepare an improvised Helipad by ramming the snow. Using smoke signals, he guided the Air Force Helicopter towards the improvised helipad and helped in the successful evacuation of the individual.

In this action, Naib Subedar Manohar Joshi displayed leadership, exemplary courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

17. JC 78430 Naib Subedar KARNAIL SINGH, Artillery.

Naib Subedar Karnail Singh was detailed as Junior Commissioned Officer-in-Charge of a party to rescue the survivors of 13-UP-Tezpur Express which fell into the Beki river at a place between Rowta and Udalgiri on the night of 29/30th May, 1977. He was entrusted with the task of rescuing people from a compartment which was hanging in mid stream. Amid shouts of lamenting victims and without caring for his own life, he personally moved to and from the compartment, secured by a rope, and rescued as many as twenty passengers most of whom were women and children.

In this action, Naib Subedar Karnail Singh displayed great courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

18. JC 85996 Naib Subedar PHILIP MANICKA RAJ, Engineers.

Naib Subedar Philip Manicka Raj was Officer-in-Charge of a column sent for rescue and relief work during floods in Midnapore District, West Bengal, in October, 1978. He and his team worked relentlessly during that month under the most adverse circumstances and rescued 4,200 persons and distributed rations to 3,000 persons. On 10th October, 1978, at Dholagarh, while carrying out rescue operations, he saw a woman and her two daughters wading through knee deep water. While moving forward, one of the girls suddenly went down in the adjacent canal unknown to them. As none of the boats was in the vicinity of the boating point at that time, Naib Subedar Manicka Raj dashed through the water and managed to bring out the girl from down stream where she had been carried by the swirling waters. The girl was resuscitated and later evacuated to hospital.

Naib Subedar Philip Manicka Raj thus displayed exemplary courage, initiative, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

19. 1170959 Barrack Havildar Major VADAKEVILA NARAYANAN SADANANDAN, Artillery.

On 9th August, 1977, the flood protection bund on Drain No. 8 surrounding Jahjjar town, was cut by villagers to ease the water pressure on their side. Water started rushing towards Jhajjar posing a grave threat to Jhajjar town. An Artillery Regiment, located nearby, was rushed to the spot. Barrack Havildar Major Vadakevila Narayanan Sadanandan took charge of one end of the breach along with his troops. They battled with the fury of the frenzied water to erect a wooden framework and reinforced it with sand bags thereby arresting the erosion. Thereafter, he worked continuously against the fast current by hanging on to a rope, fixing and hammering long wooden poles into the bed of the drain till the framework was completed. Simultaneously, he directed the men under him to reinforce the framework with sand bags at vital points. He inspired his fellow jawans by his own example to work non stop till the breach was plugged and Jhajjar town was saved.

In this action, Barrack Havildar Major Vadakevila Narayanan Sadanadan displayed exemplary courage, determination, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

20. 2851760 Havildar GANGA SINGH, Rajputana Rifles.

Havildar Ganga Singh was the second in Command of the special patrol, which was assigned the task of capturing an agent who was likely to intrude across the Line of Control. On the night of 6th August, 1977, the patrol moved out from a post in Poonch Sector stealthily over difficult route across a flooded nallah and laid an ambush. After some time, the patrol noticed an individual coming across the line of Control. Unmindful of his personal safety, Havildar Ganga Singh stalked forward and pounced upon the intruder. In order to escape, the intruder hit him with a stick, fracturing his finger, and jumped into the nallah. Inspite of the injury, Havildar Ganga Singh chased and eventually overpowered the intruder.

In this action, Havildar Ganga Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

21. 1177892 Lance Havildar RAM SINGH, Artillery.

Lance Havildar Ram Singh was detailed as in charge of a party which was organised to search and rescue the survivors

of the 13 UP-Tezpur Express which fell into the Beki river, near Udalgiri Railway Station, on the night of 29/30th May, 1977. He lead his party in heavy and continuous rains which flooded the entire area of his search. He saved the life of one injured passenger from the swollen Beki river at the risk of his own life. He was also responsible for the recovery of three dead bodies and a large number of arms, ammunition, equipment and other baggage.

In this operation, Lance Havildar Ram Singh displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

22. 1521862 Naik AJAIB SINGH, Engineers.

On 2nd September, 1977, Bahulia, Khangaon and other villages of Demow area in Sibsagar District in Assam were completely submerged under flood waters. A detachment of an Engineer Regiment located at Dibrugarh was ordered to rescue the marooned people in these villages.

While the detachment was moving in a storm boat, they heard shouts from the direction of a village. About 35 women and children had taken shelter on a high mound located in the centre of the submerged village. The boat could not be taken closer than 30 yards from the mound, where the people stood in a state of panic, because of the danger of the boat getting entangled in slush and weeds. In the fast current, the boat was made stable by Naik Ajaib Singh with three other standing in four feet deep water. Thereafter, as the women and children were not willing to wade through the water to reach the boat, two sappers held the boat and Naik Ajaib Singh carried the women and children on his shoulder from the mound and rescued all of them.

Naik Ajaib Singh thus displayed great courage, determination, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

23. 1440165 Naik MOHINDER SINGH, Engineers.

In August, 1978, the river Sutlej was in spate due to heavy rains in its catchment area. The water had inundated large area of Ferozpur division creating havoc to the property and untold miseries to the people. Army help was sought on 5th August, 1978, for the evacuation of marooned people.

Naik Mohinder Singh was a member of an Engineer detachment detailed to move to the Makhu area in Zira Sub-Division for relief operations. He was incharge of a boat and was also operating the outboard motor. His outboard motor failed three times in a trip but by his intelligent handling of the situation, he successfully carried the evacuated persons to a place of safety. During the relief operations in Mallahwala area, one of the sappers lost his life. Naik Mohinder Singh was called upon and willingly accepted to assist in that area. His fearless efforts and courage, won the appreciation of the people and the local administration.

Naik Mohinder Singh thus displayed exemplary courage, initiative, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

24. 1177739 Naik LALIT BAHADUR, Artillery.

Naik Lalit Bahadur was the Officer-in-Charge of a party detailed to rescue and search for the survivors of 13 Up Tezpur Express which met with an accident on 29/30th May, 1977, near Udalgiri Railway Station. Due to heavy rains, the water of Beki river had deluged the entire area and at places it was chest deep. Naik Lalit Bahadur led his men to work in pouring rain and succeeded in saving five stranded and wounded passengers from one of the bogies which was partially submerged in water. He also organised the search of a vast area for any survivors, dead bodies and arms and ammunition of the passangers of the ill fated train and succeeded in recovering four dead bodies and a number of small arms, ammunition and equipment.

In this action, Naik Lalit Bahadur displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of an exceptional order.

25. 1326803 Lance Naik RAMACHANDRAN, Engineers.

Lance Naik Ramachandran was the section second-in-command of the track construction party in a defended section in Tirhut area. On 1st June, 1978, while in the process of track construction, one of the one ton trucks started rolling down the ditch, Lanch Naik Ramachandran along with two more sappers jumped in and formed up behind the truck and tried to prevent the vehicle from rolling down. While doing so he realised that the vehicle could not be stopped and it was endangering the life of all the three soldiers. He immediately pushed his two comrades away from the vehicle and saved their lives. But he himself held on to the vehicle to enable them to get out. In the process his right leg come between the vehicle and an earthern bund causing injury to his right leg which was later amputated. The other two soldiers escaped unhurt. This act of sacrifice on the part of Lance Naik Ramachandran saved the life of his two comrades.

In this action Lance Naik Ramachandran displayed exemplary courage, initiative, determination and devotion to duty of an exceptional order.

26. 6311955 Lance Naik DHAN SINGH, Signals.

The line communications route between Leh and a sector Headquarters lies along a foot track. The winter of 1977-78 was so severe that the snow in this stretch had accumulated to a height of ten to fifteen feet and had disrupted the line communication route. As a result, the line detachment, deputed to repair the line, could not move farther than 8 kilometres from Digar. Lance Naik Dhan Singh who was the Non-Commissioned Officer-in-Charge of the detachment at Sobu, was ordered to rectify the line fault. He left for Digarla along with his men on 8th April, 1978. He discovered that 200 metres of the line had been swept away by an avalanche. He and his men patched up the line by using interruption cable and after working continuously for two days the line route was completely repaired. This was a creditable accomplishment which was achieved by working in hazardous deep and soft snow and inhospitable terrain.

Lance Naik Dhan Singh thus displayed exemplary courage, undaunted determination and devotion to duty of an exceptional order.

27. 4051792 Rifleman RAGHUBIR SINGH BUTOLA, Garhwal Rifles.

(*Posthumous*)

Rifleman Raghubir Singh Butola was a member of a special patrol of a scouts' battalion during August, 1977. Their area of responsibility extended from Harsil to Mana in J&K. The patrol had to move through steep snow covered mountains, dangerous glaciers and ice walls. Rifleman Butola was the leader of a subsidiary column of this patrol. While the party was negotiating a dangerous slope, one of the jawan fell sick and was unable to move. Rifleman Butola carried his luggage, in addition to his own, in order to help the sick comrade.

On 9th August, 1977, while the patrol was negotiating a steep cliff, a loose rock drifted down and hit a member of the team on his head. The individual lost his balance, slipped and fell down into a khud. Without any loss of time Rifleman Butola jumped after him, oblivious of risks to his own person and caught hold of the injured comrade. He lifted him up on his shoulders and started climbing back. In this act, he was completely exhausted and after having brought the comrade back to safe place, he fell down with severe heart attack. All efforts to revive him failed and he breathed his last.

Rifleman Raghubir Singh Butola thus displayed exemplary courage, undaunted determination and devotion to duty of an exceptional order.

28. 2570013 Sepoy NAVALURU VENKITESWARALU, Madras.

On 2nd April, 1978, an Other Rank who was returning after delivering the mail at a forward post in the Western sector, was swept away by an avalanche down the steep slopes. On receipt of this information, a party of the Infantry jawans led by 2nd Lieutenant Sunil Chopra was detailed to

search and retrieve the jawan. Sepoy Navaluru Venkiteswaralu was a member of this search party.

As the body of the missing Other Rank was not visible from the place of accident, Sepoy Venkiteswaralu and 2nd Lt. Chopra went down the slippery cliffs with the help of ropes to search it. At one stage 2nd Lieutenant Chopra slipped and rolled down the slopes but the alert and cautious Sepoy Venkiteswaralu soon took position and pulled the officer up by means of the rope. Because of the approaching darkness, the search was abondoned and the party returned.

Next morning, the search party went down the dangerous slopes again and, after a six hours long search, they were able to locate the dead body of the missing jawan. On appraisal of the situation, it was not found possible to bring the body back through the same slopes. The only alternative was to return through the river Sutlej which was in spate. It was decided to put a rope across the river. This rope, which was put across the river by Sepoy Venkiteswaralu at grave risk to his own life, enabled the party to return safely to the base with the body of the jawan.

Sepoy Navaluru Venkiteswarulu thus displayed great courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

29. 2967525 Sepoy SUKH PAL SINGH,
Rajput.

Sepoy Sukh Pal Singh was a member of a long range patrol party led by Captain R N Bhattacharji during 1978 in the Northern sector. On 25th May, 1978, it was raining heavily and the patrol was crossing a flooded nullah with the help of a rope fixed across it. Captain Bhattacharji commenced the crossing. When he was in the middle, a sudden gush of water made him lose his balance and he fell into the nullah and was washed away. Sepoy Sukh Pal Singh, who was the radio operator with the patrol, was standing some distance away. With utter disregard to his own safety, he immediately put the radio set on the ground and jumped into the nullah ten yards away from where Captain Bhattacharji had slipped. He soon got at the officer and rescued him despite fast current.

In this action, Sepoy Sukh Pal Singh displayed exemplary courage, presence of mind and devotion to duty of an exceptional order.

30. 9079897 Rifleman SADIQ AHMED
J&K Light Infantry.

On 23rd March, 1978, four civilian porters engaged on administrative duties near Nastachhun Pass in Jammu and Kashmir were suddenly hit by an avalanche. A party of Army personnel, including Rifleman Sadiq Ahmed, which was sent to search and rescue the porters, also came under an avalanche while enroute. The party subsequently reorganised itself and proceeded further immediately to carry out the search and rescue of the civilian porters.

Rifleman Sadiq Ahmed was the first member to reach the site of accident and was able to pick up two of the four porters, who were buried neck deep in the snow. He physically carried one of the porters in an unconscious state to a place of safety. The continuous snow slides and heavy blizzards occuring at the site of accident, did not deter him from carrying out his mission.

Rifleman Sadiq Ahmed thus displayed great courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

31. 13931225 Sepoy PACHKORI PASWAN,
Army Medical Corps.

On 30th May, 1977, Sepoy Pachkori Paswan was a member of the medical relief team sent to provide medical aid to the victims of train accident near Khalibari, Assam. He was ordered by the Adjutant to form a stretcher squad and accompany him towards the far bank of the site of accident. He formed the stretcher squads, accompanied the Adjutant and crossed the river on a bamboo raft. He evacuated the casualties by carrying them on his head through shoulder deep and fast flowing water and brought them to safety.

In this action, Sepoy Pachkori Paswan displayed great courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

32. 14219669 Signalman DINESH CHANDRA VYAS,
Signals.

A fire broke out in a village of Arunachal Pradesh, situated in the vicinity of Mashimpur Cantonment on 8th March, 1978. In one of the houses engulfed by fire, a nine year old child was trapped inside. Amongst the crowd that had gathered at the site, parents of the child were also present. Whereas every body was shouting for help, no body dared risk his life to rescue the child. Signalman Dinesh Chandra vyas, who was a member of Army rescue team despatched to the site, used his initiative. In full knowledge of the situation, he dashed into the house and rescued the child before the whole house collapsed in a ball of fire. In the process, however, Signalman Vyas received savere burns on his body and had to be admitted to the hospital.

In this action, Signalman Dinesh Chandra Vyas displayed exemplary courage, undaunted determination and devotion to duty of an exceptional order.

No. 7-pres./80.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :

1. Wing Commander VENKATARAMAN SHANKAR (5197),
Flying (Pilot).

Wing Commander Venkataraman Shankar has been the Officer Commanding of a Packet Squadron since 29th April, 1976. Ever since he took over Command of the Squadron, he realised the need to activate his team into a well-knit and cohesive force. As a result, the Squadron has been able to meet all operational and training Commitments that were entrusted to it and has achieved an excellent state of operational status. A man with strong love for flying and decisive and poised in handling emergencies, he was succeeded in maintaining the morale of the officers and men of his Squadron very high.

As a pilot, he has to his credit a total of 6800 hours of accident/incident free flying and 3900 hours of purely operational flying in both Eastern and Northern Sectors. He stands fully a qualified for operations in J&K, Ladakh, Nagaland, Mizoram and Arunachal Pradesh where flying calls for the most stringent standards of professional competence and acumen. By his keen insight into the working of men and material and capability to quickly anlayse situations, he has been able to bring the aircraft serviceability state of his Squadron to an all time high. it is during his stewardship that the Squadron has been adjudged the best Squadron for Flight Safety and has been awarded the Flight Safety Trophy for the year 1977. He has achieved the highest 'A'/Master Green on three different aircraft and has maintained this status for the past 14 years.

Wing Commander Venkataraman Shankar has thus displayed leadership, high professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

2. Wing Commander KAMAL KHANNA (5795),
Flying (Pilot).

Wing Commander Kamal Khanna was detailed on the 12th August, 1977, to carry out engine check on a Gnat aircraft. While carrying out aerobatics, he noticed that Jet Pack Temperature was high. He decided to return to base. While returning, he experienced buffeting of the nose, Revolutions per minute unwinding and JPT going up against the stop. This engine failure was coupled with hydraulic failure and oil pressure dolls eye turning white. Despite so many emergencies on board, Wing Commander Kamal Khanna kept cool and decided to force land the aircraft on the airfield instead of ejecting. He handled this serious emergency with utmost competence and landed the aircraft safely.

In this action Wing Commander Kamal Khanna displayed exemplary courage, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

3. Squadron Leader PEREPU SREERAMA MURTHY (6555),
Aeronautical Engineering (Mechanical).

Squadron Leader Perepu Sreerama Murthy joined the Air Force in 1962. In November, 1975, he took over as Chief

Engineering Officer of a Transport Wing. By his managerial capability and sound professional knowledge, he made acreditable contribution towards a high rate of serviceability and safe operation of ageing Dakota aircraft.

On learning about the loss of contact with the aircraft with Prime Minister on 4th November, 1977, Squadron Leader Murthy mobilised, with commendable speed, specialist and other vehicles with adequate manpower and equipment to proceed to the crash site for rescue work. On arrival at the crash site, he set forth to secure safety of the aircraft systems to prevent any explosion or outbreak of fire. Without any loss of time, he got the area, soaked with spilled fuel around the aircraft, cleared of all rescue and security personnel approaching with naked flames and kerosene lamps. Undettered by the risk involved, he manoeuvred through the narrow passages, surrounded by sharp and twisted structures, inside the crashed aircraft and isolated the sources of electrical power and also ensured that no risk of explosion existed from the charged bottles. Despite unsafe access to the fuel tanks, due to the aircraft resting on its belly and the darkness, he managed to plug the damaged fuel lines.

A crash tender and an ambulance, struck in the slushy and damaged track, had blocked the narrow approach to the crash site. This blockage affected the rescue operation to the extent that even the car carrying the Prime Minister was held up for nearly half an hour. Squadron Leader Murthy arranged for the recovery vehicles, equipment and manpower and got the blockage cleared to enable movement of all rescue vehicles and thus ensured speedy execution of the rescue operations.

In this action, Squadron Leader Perepu Sreerama Murthy displayed courage, determination, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

4. Squadron Leader HARBINDER SINGH SIDHU (7682) Flying (Pilot)

Squadron Leader Harbinder Singh Sidhu has been on the posted strength of a Packet Aircraft Squadron since January, 1974. He is a qualified Flying Instructor and has been instructing on packet aircraft since March, 1973. He has ammassed an enviable total of 4168 flying hours to his credit, out of which 1100 hours are on instructional flights. He has considerably improved, the operational and categorisation state of the squadron. As a result, the squadron not only cleared the back log in training of pilots caused due to grounding of packet aircraft but also achieved the distinction of second best categorised squadron amongst all the transport squadrons in the Air Force for the year 1977.

On the 6th April, 1978, during a night dual check sortie, he encountered a rare emergency not known in the history of packet flying. While going round at 300 feet Advanced Ground Landing, when the flaps were raised to take off position, the starboard outboard flap linkage gave way shifting the starboard outboard flap to the right which lifted the starboard aileron and acted as a lock to the airleron controls. The aircraft viciously rolled to the starboard. Undeterred by the seriousness of the situation, he maintained his presence of mind, decided to reduce power on port engine, landed on the runway with the help of rudders alone and saved the aircraft and the precious lives of the crews from an impending disaster. In an earlier accident, he gave a similar account of his high professional skill and cool headedness by crash landing on the runway at night when his aircraft was not able to maintain height due to runway propeller soon after take off.

Squadron Leader Harbinder Singh Sidhu thus displayed courage, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

5. Squadron Leader ASHOK ANAND THOSAR (8209) Flying (Pilot)

Squadron Leader Ashok Anand Thosar has been in an operational Helicopter Unit in Western Sector since May, 1976. He has to his credit 3600 hours of flying, out of which 2500 accident free hours have been on helicopters mainly over in hospitable terrain. Under his leadership, his unit, accomplished all operational tasks with great success and achieved the distinction of winning Flight Safety Trophy for the year 1977 for the Accident Free Flying record.

He has successfully undertaken innumerable operational missions, which included VIP commitments, logistic support, relief operations and casualty evacuations. During August, 1977, he gave an excellent account of his professional skill as a Chetak Helicopter Team Leader while conducting Flood Relief Operations in Delhi Area. Again, on 4th September, 1977, he evacuated a dangerously ill Army Jawan from an unprepared and restricted helipad at a height of 13,500 feet and saved a valuable life.

Squadron Leader Ashok Anand Thosar has thus displayed courage, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

6. Squadron Leader GOPALASAMUDRAM MAHADEVAN VISWANATHAN (9056) Flying (Pilot).

Squadron Leader Gopalasamudram Mahadevan Viswanathan was commisioned in the Air Force in December, 1964. He has been performing the duties of a flight commander in a front line supersonic fighter Squadron since July, 1976. He has to his credit 1980 hours of Flying on various types of aircraft of these 1625 hours are on jet fighters. He has maintained an accident-free flying record and it is for this unbleminshed performance that the was commended by Chief of the Air Staff on the 26th January, 1978.

On the 16th March, 1978, at about 1200 hours while Squadron Leader Viswanathan was performing the duties of a Senior Flying Supervisor in the Air Traffic at a Station, a fighter pilot was coming in for a landing after his training sortie. A bird hit the aircraft at a very low height just a few second before landing. The young pilot decided to eject and transmitted his intentions on the Radio telephone. Squadron Leader Viswanathan, who was fully attentive, realised that the aircraft was at too low a height to permit a safe ejection. Without loosing even a fraction of a second, he advised the pilot to force land straight ahead and there after guided him on Radio telephone about the forced landing. His alertness on duty and sound judgement helped in saving the valuable life of a young pilot as well as a valuable aircraft.

Squadron Leader Gopalasamudram Mahadevan Viswanathan thus displayed exemplary professional competence and devotion to duty of an exceptional order.

7. Flight Lieutenant SHAILENDRA PRATAP SINGH (12036) Flying (Pilot)

Flight Lieutenant Shailendra Pratap Singh has been on the posted strength of a Helicopter Unit since November, 1976. He has a record of nearly 1800 accident-free flying hours. He has flown nearly 400 hours during 1978, a major portion of which was on operational role.

During the flood relief operations in August-September, 1978, Flight Lieutenant Shailendra flew nearly 100 hours on flood relief sorties in Kanpur, Lucknow and Varanasi. As an independent detachment commander, he ensured maximum posible flying sorties to make the relief work more effective. In utter disregard to his personal comforts, he carried out his task in a purposeful manner. He also worked hard for long hours to complete his assignment.

Flight Lieutenant Shailendra Pratap Singh has thus displayed high determination, professional competence and devotion to duty of an exceptional order.

8. Flight Lieutenant BIJENDER SINGH SIWACH (12413) Flying (Pilot)

Flight Lieutenant Bijender Singh Siwach was commissioned in the Indian Air Force in June, 1970. He has served, with credit, in various Helicopter units ever-since his commission. At present he is performing the duties of a Flight Adjutant in an Air OP Squadron. The officer has been an asset to the Squadron and on more than one occasion, he has performed flying tasks out-side the call of his normal duties.

On the 7th July, 1977, Flight Lieutenant Siwach was called upon to rescue five casualties of an Army Mountaineering Expedition from Mun Kun peak area in Shafat Glaciers. The pilot had no previous knowledge of the terrain and used his professional skill to locate and evacuate casualties from an altitude of 17,000 feet. This hazardous task was performed in the face of adverse climatic conditions and he had to carry out three sorties to evacuate the five serious casualties. This flying operation took over six hours.

In this action, Flight Lieutenant Bijender Singh Siwach displayed high professional competence, determination, courage, and devotion to duty of an exceptional order.

9. 400800 Junior Warrant Officer KHAMAN SINGH SUBBA Instrument Fitter

Junior Warant Officer Khaman Singh Subba was posted as the JWO in-charge of the Helicopter Detachment. On the 2nd September, 1979, there was only one helicopter with the Detachment and it was utilised to carry out flood relief operations in and around Midnapore town in West Bengal between 1430 hours and 1800 hours. Servicing and float fitment were carried out on this helicopter till early morning on 3rd September, 1978, and the relief operations were further intensified with the arrival of 5 more Chetaks that day. The Detachment, with its fleet of 6 helicopters, actively participated in the flood relief operations till 9th September, 1978 and earned appreciation from all concerned.

All this achievement was possible because of the untiring efforts put in by Junior Warrant Officer Subba in maintaining these aircraft. By his tact and professional skill, he effectively utilised the meagre resources and limited manpower available to him. He kept up the morale of his men high by personal example. He remained with them for long hours and guided and supervised their activities which resulted in quick and systematic turn-round of the helicopters.

Junior Warrant Officer Khaman Singh Subba thus displayed determination, leadership, professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

No. 8-Pres./80.—The President is pleased to approve the award of the "BAR TO VAYU SENA MEDAL/AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned Officer for acts of exceptional devotion to duty :

Wing Commander MANJIT SINGH DHILLON (7021), Vr. C, VM Flying (Pilot)

Wing Commander Manjit Singh Dhillon was commissioned in the Air Force in 1963. He has undergone advanced Helicopter courses in foreign countries and is in command of a Helicopter Base at present. He has over 4500 hours helicopter flying to his credit. He has taken part in the 1965 and 1971 Indo-Pak conflicts. He was awarded Vir Chakra for gallantry during Indo-Pak Conflict, 1971.

The Bhagirathi river experienced unprecedented floods during August, 1978. Wing Commander Manjit Singh Dhillon conducted the relief operations and under his guidance, 35 tons of food and other supplies were airlifted to stranded pilgrims within a short period. He also directed the evacuation of 362 old and infirm pilgrims and parties of school and college students.

Immediately after the floods in the Bhagirathi river, on the night of 3rd September, 1978, All India Radio broadcast a warning of expected floods in the areas adjoining Sharanpur, Karnal and Delhi. Wing Commander Manjit Singh Dhillon anticipated that there would be a requirement of relief operations in the Western UP area. He, therefore, immediately mounted Helicopter Flights to monitor the flow of water in the river Yamuna and, therefore, directed relief and supply dropping missions in the Western UP and the Haryana sectors till the floods in the Yamuna receded. Throughout the period of relief operations commencing from the middle of August, 1978, till their relief operations commencing from the middle of August, 1978, till their completion in mid September, 1978, Wing Commander Dhillon worked tirelessly and it was by his singular determination and dauntless efforts that relief was provided in the shortest possible time to the affected areas.

Throughout these operations, Wing Commander Manjit Singh Dhillon has displayed initiative, professional competence and devotion to duty of an exceptional order.

K. C. MADAPPA, Secy.
to the President.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 27th December 1979

RESOLUTION

F. No. A-11013/194/79-Ad. IV.—In partial modification of the orders contained in Para 4 of the Resolution No. A-11013/181/77-Ad.IV, dated 28-9-78 Resolution No. A-11013/181/77-Ad.IV, dated 26-3-1979, and Resolution No. A-11013/181/77-Ad.IV, dated 23-8-1979, the Government of India have allowed extension of time upto the end of March, 1980 to the Central Excise Sugar Rebate Scheme (Review) Committee to submit its report.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India for general information.

R. D. SHARMA, Under Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE & IRRIGATION

(DEPARTMENT OF AGRICULTURE & COOPERATION)

New Delhi, the 24th December 1979

No. 26012/5/79-Fy(T-1).—In pursuance of the Ministry of Agriculture & Irrigation (Department of Agriculture) Resolution No. 26011/1/77-Fy(T-1), dated 4th April, 1979, the President is pleased to nominate the following three inland states as Member of the Central Board of Fisheries.

1. Minister Incharge of Fisheris, Government of Bihar, Patna.
2. Minister Incharge of Fisheries, Government of Tripura, Agartala.
3. Minister Incharge of Fisheries, Government of Himachal Pradesh, Simla.

The tenure of their appointment to the Central Board of Fisheries is for a period of three years from the date of issue of this notification.

R. K. SAXENA, Jt. Secy.

(DEPARTMENT OF IRRIGATION)

New Delhi, the 28th December 1979

No. 8(3)/78-GB.—In modification of the Ministry of Agriculture and Irrigation (Department of Irrigation) Notification No. 7(6)/78-GB, dated 24-6-78, it has been decided with immediate effect that the Adviser (P.P.), Department of Irrigation will be a member of the Gandak Coordination Committee in place of the Commissioner for Ganga Basin, Department of Irrigation.

D. RANGANATHAN, Under Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & CULTURE

(DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 3rd December 1979

No. F. 17-27/76-T.1.—In exercise of the powers conferred on it by Section 3 of the University Grants Commission Act, 1956 (Act, No. 3 of 1956), as amended from time to time, the Central Government in the Ministry of Education and Culture, on the advice of the Commission, does hereby declare that the School of Planning and Architecture, New Delhi, an institution of higher education managed by the School of Planning and Architecture Society, shall be deemed to be a university for the purpose of the said Act.

C. S. JHA, Educational Adviser (Technical)

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1980